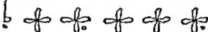


नज़ीर अकबराबादी



और उनकी शायरी



सम्पादक
सरस्वती सरन 'कैफ़'



राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली

शरद जोशी
जन्म 21 मई 1931 उज्जैन (म० प्र०)



प्रथम संस्करण
अगस्त, १९५९

मूल्य
डेढ़ रुपया

प्रकाशक
राजपाल एण्ड सन्ज़
कश्मीरी गेट, दिल्ली

मुद्रक
युगान्तर प्रेस
डफरिन पुल, दिल्ली



सूची

परिचय	५–३०
चयन	३१–१०४
नज्में	
१ ईश्वर-वंदना	३३
२ शेख सलीम चिश्ती	३५
३ गुरु नानक	३८
४ ईदुलफित्र	४०
५ होली	४२
६ आगरे की तराकी	४४
७ रीछ का बच्चा	४७
८ बचपन	५०
९ जवानी	५२
१० बुढ़ापा	५५
११ मौत का धड़का	५६
१२ बरसात की बहारें	६१
१३ कोरा बरतन	६६
१४ तिल के लड्डू	६८
१५ भंग	७०
१६ मौत	८२

१७ वजारा नामा ७६
१८ खुदा की खुदाई ७६
१६ मुफलिसी ८२
२० रोटिया ८६
२१ आदमी-नामा ८८
२२ हस नामा ६२
२३ कन्हैयाजी का खलकूद ६७

गजलें १००

फिर के निगाह चार-सू ठहरी उसी फे रू-ब-रू
उसने तो मेरी चश्म को किब्ला नुमा वना दिया

जीवनी



अगरेजी की एक कहानी का अतिम अश इस प्रकार है

'कवि ने झल्लाकर एक दिन कीर्ति से कहा, "प्यारी कीर्ति! खुले ग्राम गली कूचो मे तू कमीनों से हँसती बोलती है—तुझे शर्म नही आती! और मैं तेरे लिए खून पानी करता हू, तेरा स्वप्न देखता हू, और तू मेरी हँसी उडाती है, मेरी तरफ आख उठाकर भी नही देखती।" कीर्ति मटक कर चली गयी। जाते समय मुँडकर उसने कनखियो से एक अजीब अदाज से मुस्करा कर कवि की ओर देखा। इस तरह की मुस्कराहट उसके चेहरे पर पहले कभी न दिखलायी पडी थी। जाते-जाते वह धीरे से कह गयी—"आज से सौ वर्ष बाद कब्रिस्तान म मै तुझ से मिलूगी!"

यह कहने की हिम्मत तो खैर कोई नही कर सकता कि सच्चे कवियो को हमेशा मरने के बाद ही कीर्ति मिलती है किन्तु इससे भी इन्कार नही किया जा सकता कि बहुधा ऐसा भी होता है। इस बात का ज्वलत उदाहरण उर्दू के ख्यात नामा कवि मिया 'नजीर' अकबराबादी के जीवन से मिल जाता है। मिया 'नजीर' ने लगभग सौ वर्ष की आयु पायी। भारत जैसे देश का निवासी होकर भी इतनी लम्बी उम्र पाना अपने जीवन के अधिकार का आवश्यकता से अधिक उपयोग करना कहा जायेगा।

किन्तु इतनी लम्बी उम्र के बावजूद 'नज़ीर' को अंतिम क्षण तक कवि के रूप में ख्याति न मिली। यही क्यों? उनके मरने के लगभग सत्तर वर्ष बाद तक भी आलोचक गण उन्हें एक प्रमुख कवि के रूप में मानने से इन्कार करते रहे। बीसवीं शताब्दी में लिखे गये उर्दू साहित्य के कुछ प्रमुख इतिहासों—अब्दुल हई कृत 'गुले-रअना' और अब्दुस्सलाम नदवी कृत 'शेरुल हिन्द'—में 'नज़ीर' का कहीं उल्लेख भी नहीं किया गया। अलबत्ता बीसवीं शताब्दी के मध्य काल में आकर मियां 'नज़ीर' उभरे (यद्यपि इस समय कब्र में उनकी हड्डियां तक गल गयी होंगी)। और उभरे तो ऐसे उभरे कि आलोचकों के पास उनकी निस्पृहता, धार्मिक सहिष्णुता, देश-प्रेम, भ्रातृ भाव, पैनी दृष्टि आदि की प्रशंसा करने के अतिरिक्त और कोई चारा ही नहीं रह गया। उनका 'सब ठाठ पड़ा रह जायेगा जब लाद चलेगा बंजारा' जैसी कविताएं, जो उन्नीसवीं शताब्दी के आलोचकों की दृष्टि में उपहासास्पद समझी जाती थीं, अब कविता-प्रेमियों के गले का हार हो गयी हैं। 'जन कवि' कहकर उनको उछाला जा रहा है और लब्ध प्रतिष्ठ आलोचक उनकी रचनाओं के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालना जरूरी समझते हैं।

इतना सब होने पर भी यह नहीं कहा जा सकता कि 'नज़ीर' की ख्याति का यह चरम काल है। मेरी अपनी समझ में तो अभी आलोचकों को भी अंधेरे में प्रकाश की एक-आध ही किरण मिली है, साधारण काव्य प्रेमियों की तो बात ही

क्या है। अभी हम अपने दृष्टिकोण को इतना विस्तृत कर ही नही पाये हैं कि 'नज़ीर' की रचनाओं के वास्तविक महत्व को समझें। उसे समझने के लिए हमें लगभग सौ वर्ष और लग सकते हैं।

उन्नीसवी शताब्दी के आलोचको ने या तो 'नज़ीर' का ज़िक्र करना ही ठीक नही समझा है (क्योकि उनकी दृष्टि मे वे प्रमुख कवि ही नही थे) या नवाब मुस्तफा खा 'शेफ्ता' जैसे आलोचको ने उन्हे काफी खरी खोटी सुनाते हुए याद किया है। उपेक्षा और बेकद्री की इस दलदल से 'नज़ीर' के काव्य को सबसे पहले १९०० ई० मे औरंगाबाद कालेज के प्राध्यापक मौलवी सय्यद मुहम्मद अब्दुल गफूर 'शहबाज़' ने निकाला। इस शताब्दी म 'नज़ीर' पर जो कुछ लिखा गया है उसका आधार प्रो० शहबाज़ की प्रसिद्ध पुस्तक 'ज़िन्दगानी-ए-बेनज़ीर' है। इस पुस्तक मे जो खोज सामग्री है उससे अधिक आगे बढना किसी और के लिए सभव न हुआ, यद्यपि यह भी सही है कि प्रो० शहबाज़ ने इसमे आलोचक से अधिक प्रशसक का रवैया अपनाया है। 'ज़िन्दगानी-ए-बेनज़ीर' के बारे मे श्री सलीम जाफर ठीक ही लिखते हैं—"केन्टरबरी के डीन एफ डब्लू फैरट ने यीशु मसीह का जीवन-चरित्र लिखा है। एक आलोचक ने इसके बारे मे कहा है कि इसमे ईसा है तो, लेकिन फूलो मे छुपे हुए। यानी वर्णन-सौदर्य और अतिशयोक्ति-पूर्ण प्रशसा ने उनपर पर्दा डाल दिया है और वे निगाहो से ओझल हो गये हैं। यही आलोचना शब्दश प्रो० शहबाज़ कृत 'ज़िन्दगानी-ए-बेनज़ीर'

पर लागू होती है। मगर सच तो यह है कि उनकी खोज के आगे कदम बढ़ाना दुश्वार है।"

'नज़ीर' की जन्म तिथि का किसी को पता नहीं है। डा० सक्सेना का खयाल है कि वे नादिरशाह के दिल्ली में हमले के समय १७३६ या १७४० ई० में पैदा हुए थे। प्रो० शहबाज़ के कथनानुसार उनका जन्म १७३५ ई० मे हुआ था। खैर यह अतर कोई खास नहीं है। उनका जन्म-स्थान दिल्ली था। केवल एक तज़किरे के अनुसार वे आगरे म पैदा हुए थे लेकिन अन्य तज़किरो मे जन्म स्थान दिल्ली ही को माना गया है।

जीवन-वृत्त

'नज़ीर' के जीवन वृत्त में कोई मार्के की बात नहीं है। दरअस्ल अगर वे खुद अपने बारे म कुछ लिखते तो कुछ ज्यादा बातें मालूम होती। सो अपना जीवन वृत्त लिखना तो दूर की बात है, अपनी रचनाओ को सगृहीत करने की भी चिन्ता उन्होने नही की। प्रो० शहबाज़ को 'नज़ीर' का हाल जानने मे उनकी नवासी से, जो प्रो० शहबाज़ के ज़माने मे ज़िन्दा थी, बड़ी मदद मिली। उनसे जो हाल मालूम हुए उसका खुलासा यह है —

'नज़ीर' का नाम वली मुहम्मद था और उनके पिता का नाम मुहम्मद फारूक था। उनकी मा आगरे के किलेदार नवाब सुल्तान-खा की बेटी थी। 'नज़ीर' की पैदाइश के बाद ही दिल्ली पर लगातार मुसीबतें आने लगी। १७३६ ई० मे

नादिर शाह का हमला हुआ। उसने दिल्ली को खब लूटा खसोटा और कत्ले-आम वर्पा कर दिया। दिल्ली की गलियो मे खून की नदिया बह गयी। इसके बाद भी बहुत दिनो तक दिल्ली मे अशाति रही। अहमद शाह अब्दाली ने भी पैदरपै तीन बार—१७४८, १७५१ और १७५६ ईसवी म—दिल्ली पर हमले किये। मरहटो के भी आक्रमण हो रहे थे। चुनाचे 'नज़ीर' भी अपनी मा और नानी को साथ लेकर बाईस-तेईस साल की उम्र मे दिल्ली से अकबराबाद (आगरा) चले आये और वही ताजगज मे नूरी दरवाजे पर एक मकान लेकर रहने लगे। 'नज़ीर' आगरे मे बसे तो ऐसे बसे कि मर कर भी यही दफ्न हुए।

आगरे मे उन्होने तहव्वरुन्निसा बेगम से विवाह किया। यह अहदी अब्दुरहमान-खा चगताई की नवासी और मुहम्मद रहमान खा की बेटी थी। मुहम्मद रहमान खा मलिको की गली मे रहते थे जो ताजगज मुहल्ले में थी। 'नज़ीर' के दो सतानें थी, एक लडका गुलज़ार अली और एक लडकी इमामी बेगम। इमामी बेगम के एक लडकी हुई जिसका नाम विलायती बेगम था। विलायती बेगम प्रो० शहबाज़ के वक्त मे जिन्दा थीं और उन्होने 'जि दगानी ए-बेनज़ीर' के लिए बहुत-सी आवश्यक सामग्री दी।

'नज़ीर' का हुलिया फरहतुल्ला बेग यू लिखते है —

'नज़ीर' का रग गदुम गू (गेहुआ), कद मियाना, पेशानी ऊची और चौडी, आखें चमकदार और बेनी (नाक) बुलद

थी। दाढी खशखाशी और मोछें बडी रखते थे। खिडकीदार पगडी, गाढे का अगरखा, सीधा पर्दा, नीची चोली, उसके नीचे कुरता, एक बरका पायजामा, घीतली जूती, हाथ मे शानदार छडी, उगलियो मे फीरोज़े और अकीक की अगूठिया।"

उनकी योग्यता के बारे मे मिर्ज़ा फरहतुल्ला बेग लिखते हैं —

"इल्मी काबलियत यह थी कि आठ ज़बानें–अरबी, फारसी, उर्दू, पजाबी, भाषा, मारवाडी, पूरबी और हिन्दी जानते थे।"

श्री सलीम जाफर का कहना है कि 'नज़ीर' का क़द ठिगना, रग सावला, दाढी नदारद, और अरबी नही जानते थे और जानते भी थे तो बहुत कम। उनका कहना है कि प्रो० शहबाज़ द्वारा सम्पादित 'नज़ीर' के दीवानो और 'नज़ीर का देस-प्रेम' मे जो तस्वीर दी गयी है उसमे दाढी नही है। अपने कथन की पुष्टि मे वे स्वय 'नज़ीर' के निम्नलिखित शे'र देते है —

कहते है जिसको 'नज़ीर' सुनिए टुक उसका बया
था वो मुग्रल्लम[1] गरीब बुज़दिल-ग्रो तरसदा जा[2]
फज़्ल ने अल्लाह के उसको दिया उम्र भर
इज़्ज़तो-हुरमत के साथ पारचा - ग्रो - ग्रावो - ना[3]
फहम न था इल्म से अरबी के कुछ भी उसे
फारसी में हा मगर जाने था कुछ ईं - व - ग्रा[4]

१ अध्यापक २ भीरु ३ कपडा-खाना ४ यह वह

फर्दो - गज़ल के सिवा शौक न था कुछ उसे
अपने इसी शौक मे रहता था खुश हर ज़मा[1]
सुस्त - रविश, पस्ता-कद, सावला, हिन्दी-नज़ाद[2]
तन भी कुछ ऐसा ही था कद के मुआफिक मिया
माथे पे इक खाल[3] था छोटा सा मस्से के तौर
था वो पडा आन और अब्रुओ के दरमिया
वज़अ सुबुक उसकी थी तिस पे न रखता था रीश[4]
मोछे थी और कानो पर पट्टे भी थे पबा ना[5]
पीरी[6] मे यो जिस तरह उसको दिल-अफसुर्दगी[7]
वैसी ही थी उन दिनो जिन दिनो म था जवा
लिखने की यह तर्ज थी कुछ जो लिखे था किताव
पुख्तगी-ओ खामो[8] के उसके था खत[9] दरमिया

अगर इसके शब्दो पर जाइए तब तो श्री सलीम जाफर की बात ठीक साबित होती है लेकिन अगर 'नज़ीर' के पद्यो से उनके निरभिमानी स्वभाव का अदाजा लगाकर 'पक्तियो के बीच म पढने' का तरीका अपनाया जाय तो मिर्ज़ा फरहतुल्ला बेग की बात गलत नही जान पडती। 'नज़ीर' मे दरबारी शायरो का सा अभिमान न था। उस ज़माने की तहज़ीब के मुताबिक लोग अपने को छोटा कहा ही करते थे। तुलसीदास ने लिखा है "मो सम कौन कुटिल खल कामी।" लेकिन इन शब्दो के आधार पर उन्हे ऐसा समझ लिया जाय तो इससे

---

१ समय २ नस्ल से भारतीय ३ तिल ४ दाढी ५ रूई
६ बुढापा ७ रजीदा रहना ८ पक्कापन और कच्चाई
९ लिखावट

ज्यादा मसखरापन और क्या होगा। जरा गौर कीजिए तो मालूम हो जायेगा कि किसी निरभिमानी व्यक्ति का अपने मझोले कद को नाटा और गेहुए रग को सावला कहना स्वाभाविक ही है। दाढी भी वे खशखाशी (छोटी) रखते थे। बडी दाढी बुजुर्गी और सम्मान का चिन्ह समझी जाती थी। 'नज़ीर' ने अपने को छोटा दिखाने के लिए दाढी उडा ही दी। हो सकता है कि उनके पहले दाढी न रही हो बाद मे रखने लगे हो, गालिब ने भी तो ऐसा ही किया था। यह भी ध्यान मे रखिए कि 'नज़ीर' ने अपने पट्टो को रूई की तरह कहा है। इससे मालूम होता है कि वे अपना चित्र नही व्यग-चित्र खीच रहे हैं। इसलिए उनके शब्दो को ज्यू का त्यू सही मानना मुश्किल ही है।

खैर, कद, रगत या दाढी का बहुत महत्व नही है। यह सारी बहस उनकी योग्यता के सिलसिले मे हुई जिसे बेग साहब यथेष्ट और जाफर साहब मामूली मानते है। अरबी 'नज़ीर' कम जानते थे लेकिन बिल्कुल न जानते हो ऐसा भी नहीं था। फारसी अच्छी-खासी जानते थे और अन्य भारतीय भाषाए भी उन्हे खूब आती थी, यह उनकी रचनाओ से मालूम हो जाता है। चुनान्चे उन्हे आठ भाषाओ का जानकार मानने मे कोई दिक्कत पैदा नही होती।

स्वभाव

'नज़ीर' सतोषी प्रकृति के मस्त जीव थे। उनकी आर्थिक स्थिति बहुत मामूली रही—यद्यपि फाको की नौबत कभी नही

आयी—लेकिन रुपया उन्हे कभी आकृष्ट न कर सका। नवाब सआदत अली खा ने उन्ह लखनऊ बुलाया लेकिन उन्होने जाने से इन्कार कर दिया। इसी प्रकार भरतपुर के नवाब ने उन्हे बुलाया किन्तु वे वहा भी नही गये। कुछ दिन अध्यापन कार्य के सिलसिले म मथुरा भी रहे लेकिन उन्ह आगरा छोडना पसन्द न था, यहा की रगरलिया उन्हे कही नही मिल सकती थी इसलिए वे आगरे लौट आये और लाला बिलासराम के लडको हरबख्शराय, गुरुबख्शराय, मूलचन्द राय, मनसुखराय, वशीधर और शकरदास को पढाने लगे। वेतन उनका सत्रह रुपया मासिक था। इसी मामूली तनख्वाह पर सारी उम्र हँसते गाते काट दी।

सतोष के साथ ही जीवन का पूरा आनद लेना वे जानते थे। जवानी के दिनो म उन्होने रगरलिया भी की। उनकी रचनाओ से मालूम होता है कि उन्हे वेश्याओ का काफी अनुभव था। विशेषत एक वेश्या मोती बाई से उन्हे बडा प्रेम था। इसके अलावा उन्हे पक्षियो के पालने का भी शौक रहा होगा। अपनी रचनाओ म उन्होने पक्षियो की जितनी जानकारी दिखायी है उतनी किसी और ने नही दिखाई। यहा तक कि उनके द्वारा वर्णित कुछ पक्षियो का नाम भी आज लोग नही जानते। इसमे ताज्जुब की कोई बात नही है। पक्षियो के पालने का शौक जितना उन्नीसवी शताब्दी मे लोगो को था उतना आज के व्यस्त जीवन मे सभव नही है। इसलिए आज उनके जमाने के कई पक्षियो का पालना छोड ही दिया गया है

श्रौर लोग उनका नाम भी भूल गये हैं।

मेले ठेलो आदि से भी 'नज़ीर' को दिलचस्पी थी, तैराकी में भी वे दिलचस्पी लेते थे, कुश्ती का भी उन्हे शौक मालूम होता है। गरज कि कोई शौक ऐसा न था जो 'नज़ीर' ने पूरा न किया हो।

अत मे पच्चानवे वर्ष की अवस्था मे १६ अगस्त १८३० ईसवी को उनका देहावसान हो गया। यह सन उनके एक शिष्य द्वारा कही गयी तारीख से मालूम होता है। लायल साहब उनकी मृत्यु का समय १८३२ ईसवी बताते हैं लेकिन इसका कोई सबूत नही देते। यह अटकल शायद उन्होंने इस आधार पर लगायी होगी कि 'नज़ीर' के बारे म मशहूर था कि वे सौ वर्ष जिये। उनका जन्म सवत ११४७ हिजरी (१७३५ ई०) माना गया है। इसी आधार पर उनके देहात का समय १२४७ हि० (१८३२ ई०) लायल साहब ने मान लिया। लेकिन किंवदती और अटकल की बजाय स्पष्ट 'तारीख' का आधार ही मानना चाहिए जो १८३० ई० म उनका देहात बताती है। इस प्रकार ईसवी हिसाब से ९५ और हिजरी हिसाब से ९८ वर्ष की अवस्था मे 'नज़ीर' का देहात हुआ। मृत्यु का तात्कालिक कारण पक्षाघात था।

'नज़ीर' ने बहुत लिखा। उनके रचित शे'र सबके सब प्राप्य होते तो दो लाख से अधिक होते। लेकिन उन्होने खुद कुछ जमा ही नही किया। जो कुछ आज मिलता है (और वह भी कम नही है—लगभग ६ हजार शे'र हैं) वह उनके प्रिय

शिष्यो—लाला विलासराम के पुत्रो—ने अपनी कापियो मे लिख लिया था। इन्ही शिष्यो द्वारा सुरक्षित निम्नलिखित सामग्री मिलती है —

(१) एक कुल्लियात उर्दू का जिसमे नज़्मे और गज़ले शामिल हैं।

(२) एक दीवान फारसी नज़्मो का।

(३) फारसी गद्य मे नौ पुस्तकें जिनके नाम यह है—नरमीए-गुज़ो, कद्रे-मती, फह्मे-करी, बज़मे-ऐश, रअनाए-जेबा, हुस्ने-बाजार, तर्जे तकरीर तथा दो और जिनके नाम मुझे नही मालूम हो सके।

'नज़ीर' का काव्य

'नज़ीर' बहुत पुराने ज़माने मे पैदा हुए थे। उन्होने लम्बी उम्र पायी। उनके मरने के लगभग सौ वर्ष बाद उनकी रचनाओ को ऐतिहासिक महत्व मिला। सभवत किसी और साहित्यकार को कीर्ति इतनी देर से नही मिली। इसीलिए यह भी सुनिश्चित है कि 'नज़ीर' की कीर्ति का स्थायित्व भी अन्य कवियो की अपेक्षा अधिक होगा। अभी तो सभवत 'नजीर' के काव्य की मान्यता का शैशवकाल ही है। आइए हम 'नज़ीर' के काव्य के महत्व को समझने का प्रयत्न करें।

'नज़ीर' को उन्नीसवी शताब्दी के आलोचको ने जिनम नवाब मुस्तफा-खा 'शेफ्ता' प्रमुख हैं, निकृष्ट कोटि का कवि माना है। नवाब 'शेफ्ता' द्वारा लिखित उर्दू कवियो के तज़किरे 'गुलशने-बे-खार' की रचना के बहुत पहले ही 'नजीर' परलोक

वासी हो गये थे । किन्तु यदि 'शेफ्ता' जैसा विद्वान उनके जीवन काल ही मे उन्हे निकृष्ट कोटि का कवि करार देता तो भी उन्हे चिन्ता न होती । 'नज़ीर' ने कभी खुद को ऊचा कवि नही कहा, हमेशा अपने को साधारणता के धरातल ही पर रखा । उन्होने अपने व्यक्तित्व का भी जो चित्रण किया है (जिसे हम पहले देख आये है) उसमें अपना हुलिया बिगाडकर रख दिया है । साहित्यिक कीर्ति के पीछे दौडने की तो बात ही क्या है, उन्होने लखनऊ और भरतपुर के दरबारो के निमन्त्रणो को अस्वीकार करके जिस तरह मिलती हुई कीर्ति को भी ठोकर मार दी उसे देखकर आज के ज़माने मे—जब कि साहित्य क्षेत्र मे हर तरफ कुण्ठा का बोल-बाला दिखायी देता है—हमारी आखें आश्चर्य से फटी रह जाती हैं । हम समझ ही नही पाते कि 'नज़ीर' किस मिट्टी के बने थे ।

मैंने पहले कहा है कि 'नजीर' को अच्छी तरह समझने के लिए हमें अभी सौ वर्ष और लग जायेंगे । इस बात से कुछ साहित्यिक क्षुब्ध हो सकते हैं कि यह आधुनिक साहित्य ममज्ञता का अपमान है । कुछ लोग शायद बडे बडे कोष लेकर 'नजीर' की 'दुरूहता' का मुकाबिला करने के लिए तैयार हो जायेंगे । दरअस्ल 'नजीर' के महत्व को समझने के लिए पुस्तक ज्ञान की आवश्यकता नही के बराबर है । किन्तु इसके लिए 'जीवन' का अध्ययन जरूरी है । जब मैं कहता हू कि 'नजीर' को समझने मे अभी सौ वर्ष और लगेंगे तो तात्पर्य यही होता है कि हमारी दार्शनिक जिज्ञासा अभी 'ऊचे' मे उडानें भर रही है, प्रौढ होकर

नीचे नही उतरी है। अभी हम 'उच्च' और 'असाधारण' ही के चक्कर मे घूम रहे है, 'साधारण' के महत्व को नही समझे हैं। 'नज़ीर' साधारणता के—सहज, स्वाभाविक, विशाल जीवन के—कवि हैं, इसीलिए वे आज के 'असाधारणता' के उन्माद मे घुधले से नजर आते है। उन्नीसवी शताब्दी के कुहरे मे तो उन्हे देखना सभव ही नही था।

बात कुछ अजीब सी मालूम होती है। है न ? लेकिन ज़रा गौर से देखिए तो इसकी सत्यता स्पष्ट हो जायेगी। प्राचीन काल मे धर्म-प्रवतकों ने भी अपने नैतिकता के बुनियादी सिद्धातो को जन-साधारण से मनवाने के लिए चमत्कारो का सहारा लिया था। बाद के लोगो ने धर्म-प्रवतकों की महान जीवनियो से, जो तब तक उनके लिए असाधारण हो चुकी थी, प्रेरणा प्राप्त की है। लेकिन 'पत्थरो और स्रोतो से उपदेश' लेने के लिए शेक्सपियर जैसे मेधावो की चेतना अपेक्षित थी। मानव मन अपनी अविकसित अवस्था मे असाधारणता से आकृष्ट और प्रेरित होता है, और जैसे जैसे उसका विकास होता जाता है वह साधारण वस्तुओ के महत्व को समझ जाता है और उन्ही मे आनन्द लेता है। जीवन में यह तथ्य हर जगह दृष्टि-गोचर होगा। यहा मैं केवल दो-एक उदाहरण देना पर्याप्त समझता हू। बच्चो को या तो परियो की कहानिया पसन्द होती हैं या ऐसी कहानिया जिनमे जानवर भी इसानो की तरह बातें करें। उनकी कल्पना-शक्ति इतनी जोर की उछाल के बगैर जागृत ही नही होने पाती। नौजवानो को असाधारण

पुरुषो के स्वाभाविक किन्तु असाधारण कार्य-कलाप ही प्रेरित करते हैं, चाहे वह महाराणा प्रताप और शिवाजी का शौर्य हो या बुद्ध, ईसा और गाधी के प्रेम और अहिंसा के सिद्धात। और प्रौढो को सबसे अधिक रस साधारण जीवन के दुख-सुख की कहानियो मे ही आता है। शिक्षा और स्वाध्याय द्वारा बुद्धि के परिष्कार की विभिन्न मजिलो मे भी यही दिखाई देता है। अशिक्षित वर्ग अस्वाभाविकता की हद तक असाधारण चरित्रो ही से—उदाहरणार्थ आल्हा और ऊदल—ही से प्रेरित हो पाते हैं किन्तु सुशिक्षित एव साहित्यिक रुचि रखने वाले व्यक्तियो को बुद्धू, कल्लू आदि जन-साधारण के जीवन ही से प्रेरणा मिल जाती है।

बात कही से कही पहुँच गई। कहना सिर्फ यही है कि अभी तक जो भी उर्दू साहित्य सामने आया है उसका आधार असाधारणता है—चाहे वह तथ्यो की असाधारणता हो, चाहे साधारण तथ्यो से निकाले जाने वाले विशिष्ट सर्वव्यापी सिद्धातो की। इसके विपरीत मिया 'नज़ीर' बिल्कुल साधारण बातो को बिल्कुल साधारण दृष्टि से देखते थे। कोई पूर्व निश्चित सिद्धात या पूर्वाग्रह (प्रेजुडिस) उनके लिए बाधक नही बनता था। इसीलिए एक ओर तो उनके काव्य मे ऐसी सहज और सुन्दर गति पैदा हो गई है जो उनका एक विशिष्ट स्थान बना देती है और दूसरी ओर विशेष वादो, सिद्धातो, पूर्वाग्रहो और काव्य-शास्त्र के नियमो का चश्मा लगाकर उनकी इसी असाधारण साधारणता को देखना असम्भव नही तो दुष्कर अवश्य हो जाता है।

आत्म-निर्भर पर्यवेक्षरण

उन्नीसवी शताब्दी की साहित्यिक चेतना सामन्त वर्ग ही तक सीमित थी इसीलिए उस समय के उर्दू तथा व्रज भाषा के काव्य मे प्रेम के क्रमश सूफीवादी और भक्ति-मार्गी रूप का दिग्दर्शन ही परम लक्ष्य था। बीसवी शताब्दी में साहित्यिक चेतना का आधार विस्तृत हुआ, वह मध्य वर्ग तक पहुची, उसमे विषय बाहुल्य हुआ और उसे मुख्यत राष्ट्रीयता और समाजवाद से प्रेरणा मिली। बीसवी शताब्दी की साहित्यिक चेतना के जनोन्मुख होने के फलस्वरूप लोगो का ध्यान 'नज़ीर' पर गया क्योकि वे जनसाधारण की बातें करते थे। राष्ट्रीयता-वादी साहित्यिक चेतना को भी 'नज़ीर' का काव्य पसद आया क्योंकि उसमे भारतीय सस्कृति के दर्शन होते थे। नतीजा यह हुआ कि 'नज़ीर' की प्रशसा उनके 'जन-प्रेम' और 'राष्ट्रीयता' के आधार पर होने लगी।

अगर आप किसी से पूछें कि गाधी जी की महानता का रहस्य क्या था, और वह उत्तर दे कि वे अगरेज़ी बडी सुन्दर लिखते थे, तो आपको कैसा लगेगा ? सभवत आप यही कहेगे, "भाई ! यह ठीक है कि वे अगरेज़ी अच्छी लिखते थे, लेकिन उनकी महानता अच्छी अगरेज़ी लिखने मे नही बल्कि और ही बातो मे निहित है।" मुझे 'नज़ीर' के वर्तमान आलोचकों से बिल्कुल यही बात कहनी है। वे पूर्णत 'हिन्दुस्तानी' कवि थे, वे जन-साधारण के बारे में बातें भी करते थे—इन दोनो बातो मे किस कम्बख्त को शक है ? लेकिन 'नज़ीर' की महानता का

आधार इन दोनो बातो के अलावा और भी कुछ है और उसे भी कुछ समझने की जरूरत है।

'नज़ीर' के काव्य की विवेचना के पहले एक बात और सुन लीजिए। भारतीय-दर्शन के अनुसार ज्ञान की चरम सीमा साधारण व्यावहारिक बुद्धि का लोप है। परमहस वही होता है जिसकी व्यावहारिकबुद्धि केवल नवजात शिशु जितनी रह जाये। मुझे 'नज़ीर' को परमहस साबित करने की कोशिश नही करनी है। वे परमहस नही थे। किन्तु वे अपनी चेतना को विकसित करके—मग्न-चेतना (Sub-concious) रूप ही से सही—जन-साधारण के स्तर तक ले आये थे। उनमे इसी विकसित चेतना के बाल-सुलभ कौतूहल के साथ ही प्रौढता की विशाल दृष्टि भी थी। इसके बल पर वे पर्यवेक्षण की उस स्थिति मे पहुच गये थे जहा सिद्धातो का सहारा लेकर समस्या का समाधान करने की आवश्यकता नही पडती बल्कि स्वय समस्या ही समस्या का समाधान बन जाती है। वास्तविकता भी यही है कि समस्या ही सत्य है, समाधान तो कल्पना-मात्र है।

उदाहरण के लिए 'मानवता' ही के विषय को लीजिए। मानव की असख्य परिभाषाए की गई हैं और अभी तक कोई सर्वांगपूर्ण नही हो सकी है। 'नज़ीर' ने मानव सम्बधी प्रश्न को प्रश्न ही के रूप मे सामने रखा है, मगर इस तरह साफ खोलकर रखा है कि आदमी की पूरी तसवीर सामने आती है और इस तरह आती है कि उसके ओर छोर का कुछ पता नही चलता। उदाहरण स्वरूप उनके 'आदमी-नामा' के दो बद देखिए —

या आदमी पे जान को वारे है आदमी
और आदमी पे तेग को मारे है आदमी
पगडी भी आदमी की उतारे है आदमी
चिल्ला के आदमी को पुकारे है आदमी
और सुनके दौडता है सो है वह भी आदमी

मरने मे आदमी ही कफ़न करते हैं तयार
नहला-धुला उठाते हैं काधे पे कर सवार
कलमा भी पढते जाते हैं रोते हैं ज़ार ज़ार
सब आदमी ही करते हैं मुर्दे का कारोबार
और वह जो मर गया है सो है वह भी आदमी

'नज़ीर' को 'ऊचे' सिद्धातो का मोह नही था। ये सिद्धात उन्हे अपने स्वाभाविक मनोभावो के प्रकाशन से रोक कर उनके जीवन को हमारे जीवन की भाति कृत्रिम न बना सके थे। केशवदास का यह दोहा देखिए —

'केसव' केसन अस करी जस अरिहू न कराहिं
चन्द्रवदनि मृगलोचनी बाबा कहि कहि जाहिं

हमारे लिए आज यह दोहा मात्र परिहास की सामग्री है। लेकिन क्या कोई दिल पर हाथ रखकर कह सकता है कि प्रौढावस्था प्राप्त होने पर उसका हृदय भी यही नही कहता है? हा, यह जरूर है कि हमने सामाजिक व्यवस्था के लिए अपनी सामर्थ्य के अनुसार कुछ नियम बनाये है और जब हमारी भावनाए मर्यादा के इन नियमो से टकराती है तो हम उन्हे दूसरो से छुपाते-छुपाते अपने से भी छुपाने लगते हैं। किन्तु

कलाकार को तो केवल मनोभावो के प्रकाशन से मतलब है। सत्य का तकाजा यही है। सत्य के प्रकाशन के लिए साहस की आवश्यकता है। 'नज़ीर' मे यह साहस इतना बढा हुआ था कि स्वाभाविक जीवन व्यतीत करने वाले जनसाधारण ही उसे बर्दाश्त कर पाते, कृत्रिम जीवन के अभ्यस्त अभिजात वर्ग के लिए यह बर्दाश्त के बाहर की चीज़ थी। सत्य का सामना न कर सकने पर उसे 'अश्लीलता' कहा जाता है। 'नज़ीर' पर भी 'अश्लीलता' का फतवा लगा दिया गया क्योकि वे यह पक्तिया भी लिख सकते थे —

गर नायका उनमे कोई बूढी है कहाती
अलबत्ता बुढापे पे वो टुक रहम है खाती
फीकी सी, पुरानी सी लगावट है जताती
पर वह है हमको वो ज़रा खुश नही आती
सब चीज़ को होता है बुरा हाए बुढापा
आशिक को तो अल्लाह न दिखलाए बुढापा

जब आप जी भर हँस लें तो ज़रा यह भी गौर कर लीजिएगा कि उन्नीसवी शताब्दी के भारतीय समाज मे एक प्रेमी के—वह कलाकार ही क्या होगा जो प्रेमी न हो—बुढापे का इससे ज्यादा सही चित्रण कही और मिल सकता है ?

विरोधाभास

नज़ीर' अक्सर 'परस्पर विरोधी' बातें कहते हैं। एक तरफ वे कहते हैं कि "सब ठाठ पडा रह जायेगा जब लाद चलेगा बंजारा" और संसार की असारता के गीत गाते हैं और विश्व

के कण-कण मे ईश्वर के दर्शन करते है —

हर आन मे हर बात मे हर ढग मे पहचान
आशिक है तो दिलबर को हर-इक रग मे पहचान

दूसरी ओर वे निधनता की निन्दा और धन की प्रशसा करने लगते है और दुनियादारी की बातें कहते-कहते यहा तक कह डालते हैं —

सच है कहा किसी ने कि 'भूखे भजन न हो'
अल्लाह की भी याद दिलाती हैं रोटिया

वैराग्य और ईश-प्रेम की बातो के साथ ही 'नज़ीर' मेलो-ठेलो, तैराकी, चिडियो, जानवरो की लडाई और लैला-मजनू की कथा का भी वणन करने लगते है और खूब वर्णन करते हैं। 'रीछ का बच्चा' का एक बद देखिए —

इक तरफ को थी सैकडो लडको की पुकारें
इक तरफ को थी पीरो-जवानो की कतारें
कुछ हाथियो की चीक और ऊटो की डकारें
गुल, शोर, मज़े, भीड, ठठ, अम्बोह, बहारें
जब हमने किया लाके खडा रीछ का बच्चा

'नज़ीर' का यह 'परस्पर विरोध' आज के सिद्धातवादी-बुद्धिवादी मस्तिष्क के लिए उलझन और खीझ का कारण बन जाता है। सम्भवत इसीलिए आधुनिक आलोचक उनकी प्रशसा करते-करते झिझक जाते हैं। लेकिन आखिर क्या किया जाय ? जीवन को तर्क और सिद्धातो के साचे मे फिट करके तो नही रखा जा सकता। 'नज़ीर' का कसूर अगर कुछ है तो सिर्फ इतना कि उन्होने जीवन की विशालता को भी देखा था

और जीवन के परस्पर विरोधो मे सन्निहित मौलिक एकता को भी। इस तथ्य को समझते और मानते सभी हैं लेकिन 'नज़ीर' ने इसे 'देख' लिया था और जो देखा उसे ईमानदारी से कह भी दिया।

जहा तक जीवन-रूपी पुस्तक के विस्तृत अध्ययन का प्रश्न है मुझे 'नज़ीर' से आगे बढा हुआ साहित्यकार और कोई नही मिला—कम से कम पूर्वीय देशो मे। 'नज़ीर' ने लगभग ६५ वर्ष की आयु भोगी और सच्चे अर्थों मे भोगी। ऐश आराम से न रहने पर भी उन्होने जीवन का पूरा आनद लिया, ससार की तथाकथित छोटी से छोटी बातो मे पूरी दिलचस्पी ली और उन सभी बातो को इस तरह सामने रख दिया कि और लोग भी जीवन का पूर्ण उपयोग कर सकें। साधारण जीवन म उन्होने जाडा, गर्मी, बरसात, तरबूज, कोरे बर्तन, आगरे की ककडी, तिल के लड्डू आदि म रस लिया। सौंदर्योपासना के क्षेत्र मे मनुष्यो के सौदय से लेकर बहार, चादनी, ताजमहल—सभी का जी भर आनन्द लिया। सोचने बैठे तो बचपन, जवानी बुढापा, मौत का धडका—सभी को सोच डाला। मेलो तमाशो में ईद, होली (होली मालूम होता है उनका प्रिय त्योहार था क्योकि उसपर दस नज्मे लिखी है), दीवाली आदि से लेकर कबूतर-बाज़ी, रीछ का बच्चा, गिलहरी का बच्चा—सब का तमाशा देख डाला। भक्ति भाव उमडा तो धार्मिक प्रतिबधो की भी परवा न की और हज़रत मुहम्मद और हजरत अली से लेकर सूफी सत शेख सलीम चिश्ती और फिर नानक तथा

कृष्ण, महादेव के चरणो म भी श्रद्धा के फूल चढा दिये । और यह सब जी भर देखने-सुनने के बाद जब जीवन की नश्वरता का ध्यान आया तो 'वजारा नामा' और 'फकीरो की सदा' लिखकर सासारिक विषय-वासना मे फसे लोगो को चेतावनी देने लगे । और अत मे ईश्वर के प्रेम म अपना पूरा अस्तित्व समर्पित करके अत मे 'मौत के धडके' को भी दूर कर डाला। जन्म से लेकर मरण-पर्यंत पूरे जीवन का इस उत्साह के साथ वर्णन कही और नही मिलता । यही 'नजीर' का पूण यथाथ-वाद है।

औरो ने हमे यथार्थवाद के नाम पर जीवन का कोई एक कोना उघाड कर दिखाया है, 'नज़ीर' ने सम्पूर्ण जीवन को उघाड कर रख दिया है और उसम शोख रग भर दिये हैं ।

औरो से हमे धरती के गीत वर्ग विशेष की पृष्ठ-भूमि म सुनने को मिले है, 'नज़ीर' ने धरती-आकाश के गीतो को सारी मानवता की पृष्ठ भूमि मे पेश कर दिया है ।

औरो ने विशिष्ट सिद्धातो के माध्यम से हमे जीवन के सत्य के अशत दर्शन कराये हैं, 'नजीर' ने सिद्धातो को ताक पर रखकर केवल अनुभूति और निरीक्षण के वर्त पर हम विशाल यथाथ (चाहे तो उसे सत्य भी कह लीजिये) दिखलाने की कोशिश की है ।

औरो के यहा हमे असाधारणता का प्रेम मिलता है और उन्होने असाधारणता को भी साधारण बना दिया है, 'नज़ीर'

ने साधारण ही को असाधारण बना कर उसमें चमत्कार पैदा कर दिया है।

हमारी निगाहे अभी इतने विशाल यथार्थ—सत्य के विराट रूप—के दर्शन के लिए शायद कच्ची पड़ें। हमे आशा है कि शायद हम आयदा कभी उस सत्य को देख सकेंगे जिसे 'नज़ीर' ने डेढ-दो सौ वप पहले देख लिया था।

कला और भाषा

उर्दू के काव्य-शास्त्र की दृष्टि से 'नज़ीर' की रचनाओ मे बहुत-सी गलतिया होती है। वे रदीफ, काफ़िया, उच्चारण, ध्वनि सौन्दय की परवा करते नही दिखायी देते। एक तरह से यह 'कमज़ोरी' 'नज़ीर' के लिए अच्छी ही साबित हुई। काव्य-शास्त्र के बधनो मे रहने पर उनकी चेतना इतने उन्मुक्त रूप से प्रस्फुटित होती या नही इसमे सदेह है। फिर भी 'नज़ीर' उस हद तक काव्य-नियमो की पाबदी तो करते ही हैं कि कविताओ मे सरलता रहे। वे काव्य सम्बधी नियमो के प्रति विद्रोह नही करते। हा, कभी-कभी उनकी उपेक्षा जरूर कर दिया करते हैं।

इस उपेक्षा के दो कारण हो सकते हैं। एक तो यह कि 'नज़ीर' को किसी कवि से स्पर्धा नही हुई और उन्हे इस मैदान म ज़ोर-आज़माई का मौका न मिला। दूसरे यह कि वे दूसरो के कहने पर कविता रच दिया करते थे। मालूम नही कितने फ़क़ीरो, दुकानदारो आदि को उन्होने उनके मतलब की कविताएँ रचकर दी। इस दृष्टिकोण से की गई कविता का नतीजा काव्य-

नियमो मे ढिलाई के अलावा और क्या होगा ?

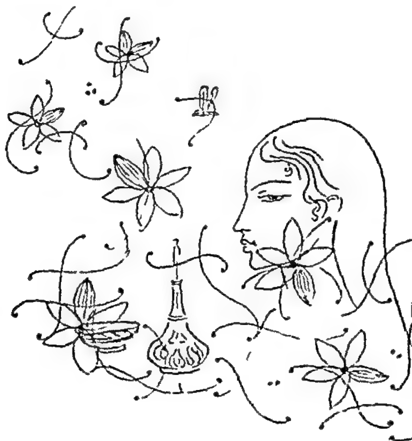
फिर भी 'नज़ीर' के काव्य मे हम कलात्मक-रूप से दो बातें स्पष्ट दिखायी देती हैं

(क) 'नज़ीर' ने अलकारो मे पीछा छुडाकर प्रत्यक्ष काव्य-कला के दर्शन कराये हैं। बीसवी शताब्दी में इस सीधी असर डालने वाली शैली का काफी महत्व है लेकिन 'नज़ीर' ने उन्नीसवी—बल्कि अट्ठारहवी—शताब्दी ही मे यह जरूरत महसूस कर ली थी।

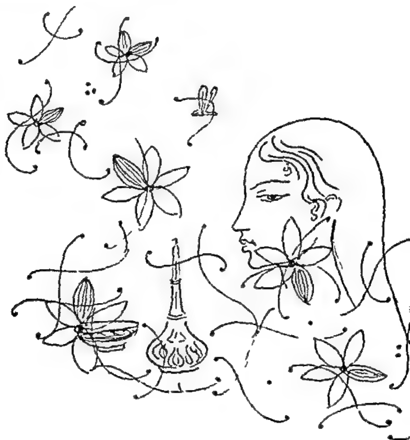
(ख) 'नज़ीर' ने रूपको (Allegories) का प्रयोग उर्दू मे शायद सबसे अधिक किया है। 'हसनामा', 'बजारानामा' आदि इसके उदाहरण हैं जिनमे मनुष्य के क्षण-भगुर जीवन को हस, बजारा आदि के रूपको मे प्रस्तुत किया है। यह प्रभाव 'नज़ीर' में स्पष्टत फकीरो की सगत से आया है और तत्सम्बधी विषयो ही पर की गयी कविताओ मे इस शैली का प्रयोग अधिकाधिक हुआ है। उनकी नज़्म 'रीछ का बच्चा' के बारे मे भी कुछ आलोचको का मत है कि रीछ के रूपक मे मन के साथ होने वाले सघर्षों का वर्णन है।

भाषा के क्षेत्र म 'नज़ीर' से अधिक उदार कोइ उर्दू कवि नही हुआ है। उन्होने जन-सस्कृति (जिसमे हिन्दू सस्कृति भी शामिल थी) का दिग्दर्शन कराया है, इसलिए चलताऊ और हिन्दी के शब्द भी बहुतात से प्रयुक्त किये हैं। व्याकरण-सम्बधी नियमो की दृष्टि से 'नज़ीर' की भाषा 'मीर' और 'सौदा' के ज़माने की उर्दू है जिसमे आज की उर्दू जैसा परिष्कार और

चयन



चयन



ईश्वर-वंदना

इलाही तू फय्याज़[1] है और करीम[2]
इलाही तू गफ्फार[3] है और रहीम[4]
मुक़द्दस[5], मुअल्ला[6], मुनज्ज़ा[7], अज़ीम[8]
न तेरा शरीक और न तेरा सहीम[9]
तेरी जाते-वाला है सबसे क़दीम

तेरे हुस्ने-कुदरत[10] ने या किदगार[11]
किये हैं जहा मे वो नक़्शो-निगार[12]
पहुचती नही अक्ल उन्ह ज़र्रा-वार[13]
तहय्युर[14] मे हैं देखकर बार-बार
हैं जितने जहा म ज़हीनो फहीम[15]

ज़मी पर समावात[16] गर्दा[17] किये
नजूम[18] उनम क्या-क्या दरख्शा[19] किये
नबातात[20] बेहद नुमाया किये
अया[21] बह्र[22] से दुर्रो-मरजा[23] किये
हजर[24] से जवाहर भी और ज़र्रो-सीम[25]

शिगुफ्ता[26] किये गुल ब फस्ले-बहार
अनादिल[27] भी और कुमरी ओ-कब्कसार[28]

---

१ दानी २ कृपालु ३ क्षमाशील दयालु ५ पवित्र ६ उच्च ७ पवित्र ८ उच्च ९ हिस्सेदार १० निर्माण कौशल ११ विधाता १२ चित्र वचित्र्य १३ तनिक भी १४ हैरानी १५ बुद्धिमान १६ आकाश १७ घूमने वाले १८ सितारे १९ चमकने वाले २० वनस्पतिया २१ प्रकट २२ समुद्र २३ मोती, मूगा २४ पत्थर २५ सोना-चादी २६ प्रफुल्लित २७ बुलबुलें २८ फाख्ता और तीतर

बर्गे - वर्गो - नख्लो - शजर[1] शाखसार[2]
तरावत[3] से खुशबू से हंगाम - कार[4]
रवा की सवा[5] हर तरफ और नसीम[6]
बया कब हो खिलकत[7] को अनवाअ[8] का
जो कुछ हस्र[9] होवे तो जावे कहा
खुसूमन बनी - आदमे - खुश - लका[10]
शरफ[11] उन सभी म इन्ही को दिया
ये इस्लाम - ओ - ईमानो - दीने - कदीम
अता की इन्हे दौलते - माअरिफत[12]
इबादत[13] इताअत[14] निको-मजिलत[15]
हया, हुस्नो - उल्फत, अदब, मस्लहत
तमीजो-सुखन[16] खुल्क[17] खुश-मकमत[18]
फरावा[19] दिये और नाजो - नईम[20]
तेरा शुक्रे - अहसा हो किससे अदा
हमे मेह्र[21] से तूने पैदा किया
किये और अल्ताफ[22] बे - इन्तहा
'नजीर' इस सिवा क्या कहे सर झुका
ये सब तेरे इकराम[23] है, या करीम !

० ० ०

१ फल, पत्ते, पेड पौधे २ शाखाए ३ नमी ४ भरी ५ सुबह की हवा ६ ठडी हवा ७ सृष्टि ८ किस्मा ९ सीमा १० सुदर मानव जाति ११ सम्मान १२ ईश ज्ञान रूपी धन १३ पूजा १४ आज्ञाकारिता १५ नेकी १६ बुद्धि और वाग्शक्ति १७ शिष्टाचार १८ न्याय भाव १९ अत्यधिक २० ऐश्वय २१ कृपा २२ कृपाए २३ कृपाए

शैख़ सलीम चिश्ती

है दो जहाँ के सुल्ता हज़रत सलीम चिश्ती
आलम के दीनो ईमा-हज़रत सलीम चिश्ती
सरदफ़्तरे-मुसलमाँ[1] हज़रत सलीम चिश्ती
मक़बूले-ख़ासे-यज़्दा[2] हज़रत सलीम चिश्ती
सरदारे-मुल्के-इरफ़ा[3] हज़रत सलीम चिश्ती

शाहो के बादशा हो बा-ताज बा-लिवा[4] हो
और किब्लए सफ़ा[5] हो और काबए-ज़िया[6] हो
ख़िलक़त[7] के रहनुमा हो, दुनिया के मुक़्तदा[8] हो
तुम साहबे-सख़ा[9] हो महबूबे किब्रिया[10] हो
है तुम से ज़ेबे-इमका[11] हज़रत सलीम चिश्ती

शाहो-गदा है ताबेअ़[12] सब तेरी मुमलिकत[13] के
लायक तुम्ही हो शाहा इस क़द्रो-मंज़िलत[14] के
परवर्दा[15] है तुम्हारे सब ख़्वाने-मक़मत[16] के
शाहा शरफ़[17] तू बख़्शे ख़ालिक़[18] की सल्तनत के
और तुम हो मीरे-सामाँ[19] हज़रत सलीम चिश्ती

---

१ मुसलमानो के नायक २ ईश्वर के परम प्रिय ३ ज्ञान के देश के राजा ४ झडे वाले ५ पवित्रता के पूज्य ६ प्रकाश के पूज्य ७ ससार ८ पथ प्रदर्शक ९ दानी १० ईश्वर के प्यारे ११ दुनिया की रौनक १२ मातहत १३ राज्य १४ सम्मान १५ पाले हुए १६ कृपा का दान १७ इज्जत १८ ईश्वर १९ ससार के नायक

है नामे - पाक तेरा मशहूर शहरो बन मे
करती हैं याद तुमको ये जानें हैं जो तन मे
है खुल्क[१] की तुम्हारे खुशबू गुलो समन[२] मे
खिदमत मे हैं तुम्हारी फिरदौस[३] के चमन म
जन्नत के हूरो-गिल्मा, हज़रत सलीम चिश्ती

है सल्तनत जहा की सब तेरे जेरे-फरमा
चाकर हैं तेरे दर के फगफूर[४] और खाका[५]
ख्वाने-करम पे तेरे हे खल्क[६] सारी मेहमा
है हुक्म मे तुम्हारे जिन्नो - परी - ओ - इसां
हो वक्त के सुलेमां हज़रत सलीम चिश्ती

तुम सबसे हो मुअज्जम[७] और सबसे हो मुकरम[८]
खिलकत[९] हुई तुम्हारी सब नूर से मुजस्सम[१०]
और खूबियाँ जहा की तुम पर हुईं मुसल्लम[११]
अब्रे-करम[१२]से तेरे दायम[१३]है सब्जो-खुर्रम[१४]
आलम का सब गुलिस्ता हज़रत सलीम चिश्ती

पुश्तो-पनाह[१५] हो तुम हर इक गदा-ओ-शह के
मुहताज हैं तुम्हारी इक लुत्फ की निगह के

१ शिष्टता २ गुलाब और बेला ३ स्वर्ग ४ पुराने चीन के बादशाह ५ पुराने तुर्क बादशाह ६ ससार ७ महान् ८ सम्मानित ९ रचना १० पूर्णत ११ पूरी १२ कृपा के बादल १३ सदा १४ प्रसन्न और हरा १५ सहारा

मजिल पे आके पहुचे सालिक[1] तुम्हारी रह के
खाके-कदम तुम्हारी और चश्म[2] मेह्रो-मह[3] के
हो रौशनी के सामां हजरत सलीम चिश्ती

आलम है सब मुअत्तर[4] तेरे करम[5] की बू से
हुरमत है दोस्तो को हजरत तुम्हारे रू से
यह चाहता हू अब मैं सौ दिल की आरजू से
रखियो 'नजीर' को तुम दो जग म आबरू से
ऐ मूजिदे हर-अहसां[6] हजरत सलीम चिश्ती

० ० ०

१ चलने वाले २ आख ३ सूय चन्द्र ४ सुगंधित ५ कृपा
६ हर कृपा करने वाले

गुरु नानक

कहते हैं नानक शाह जिन्हे वह पूरे हैं आगाह[1] गुरु
वह कामिल[2] रहबर[3] जग में है यू रोशन जैसे माह[4] गुरु
मक्सूद[5] मुराद उम्मीद सभी बर लाते हैं दिलख्वाह गुरु
नित लुत्फो-करम[6] से करते है हम लोगो का निवाह गुरु
इस बख्शिश के इस अज़मत[7] के हैं बाबा नानक शाह गुरु
सब सीस झुका अरदास करो और हरदम बोलो वाह गुरु

हर आन दिलो विच या अपने जो ध्यान गुरू का लाते हैं
और सेवक होकर उनके ही हर सूरत बीच कहाते हैं
गुरु अपनी लुत्फो-इनायत से सुख चैन उसे दिखलाते हैं
खुश रखते हैं हर हाल उन्हे सब उनके काज बनाते हैं
इस बख्शिश के इस अज़मत के हैं बाबा नानक शाह गुरु
सब सीस झुका अरदास करो और हरदम बोलो वाह गुरु

दिन-रात सभो ने या दिल दे है यादे गुरु से काम लिया
सब मन के मकसद[8] भर पाये खुश-वक्ती का हगाम[9] लिया
दुख दर्द मे अपने ध्यान लगा जिस वक्त गुरू का नाम लिया
पल बीच गुरू ने आन उन्हे खुशहाल किया और थाम लिया
इस बख्शिश के इस अज़मत के हैं बाबा नानक शाह गुरू
सब सीस झुका अरदास करो और हरदम बोलो वाह गुरु

---

१ ज्ञानी २ पूर्ण ३ पथ प्रदर्शक ४ चन्द्रमा ५ अभिलाषा
६ कृपा ७ महानता ८ अभिलाषाएं ९ समय

या जो-जो दिल की ख़्वाहिश की कुछ बात गुरू से कहते हैं
वो अपने लुत्फ़ो शफ़क़त[1] से नित हाथ उन्हों के गहते हैं
अल्ताफ़[2] से उनके ख़ुश होकर सब ख़ूबी से यह कहते हैं
दुख-दर्द उन्हों के हरते हैं सौ सुख से जग में रहते हैं
इस बख़्शिश के इस अज़मत के हैं बाबा नानक शाह गुरू
सब सीस झुका अरदास करो और हरदम बोलो वाह गुरू

जो हर दम उनसे ध्यान लगा उम्मीद करम[3] की धरते हैं
वो उन पर लुत्फ़ो इनायत की हर आन तवज्जह करते हैं
असबाब ख़ुशी और ख़ूबी के घर बीच उन्हों के भरते हैं
आनन्द इनायत करते हैं सब मन की चिन्ता हरते हैं
इस बख़्शिश के इस अज़मत के हैं बाबा नानक शाह गुरू
सब सीस झुका अरदास करो और हरदम बोलो वाह गुरू

जो लुत्फ़ो-इनायत उनमें है कब वस्फ़[4] किसी से उनका हो
वो लुत्फ़ो करम जो करते हैं हर चार तरफ़ हैं ज़ाहिर वो
अल्ताफ़ जिन्हों पर हैं उनके सौ ख़ूबी हासिल है उनको
हर आन 'नज़ीर' अब या तुम भी तो बाबा नानक शाह कहो
इस बख़्शिश के इस अज़मत के हैं बाबा नानक शाह गुरू
सब सीस झुका अरदास करो और हरदम बोलो वाह गुरू

---

१ कृपा और स्नेह २ कृपाएं ३ दया ४ गुण (बखान)

ईदुलफित्र

है आबिदो[1] को ताअ़तो-तजरीद[2] की खुशी
और ज़ाहिदो[3] को ज़ुहद[4] की तमहीद[5] की खुशी
रिन्द[6] आशिको को है कई उम्मीद की खुशी
कुछ दिलबरो के वस्ल की कुछ दीद की खुशी
ऐसी न शब-बरात न बकरीद की खुशी
जैसी हर एक दिल मे है इस ईद की खुशी

पिछले पहर से उठके नहाने की धूम है
शीरो - शकर[7] सिवय्या पकाने की धूम है
पीरो - जवा को नेअ़मत खाने की धूम है
लडको को ईदगाह के जाने की धूम है
ऐसी न शब बरात न बकरीद की खुशी
जैसी हर एक दिल मे है इस ईद की खुशी

कोई तो मस्त फिरता है जामे - शराब से
कोई पुकारता है कि छूटे अज़ाब[8] से
कल्ला किसी का फूला है लड्डू की चाब से
चटकारें जी मे भरते है नानो - कबाब से
ऐसी न शब-बरात न बकरीद की खुशी
जैसी हर एक दिल मे है इस ईद की खुशी

१

१ भक्तो २ उपासना ३ कर्मकाण्डिया ४ धार्मिक कृत्य ५ पालन
६ शराबी ७ दूध चीनी ८ मुसीबत

क्या ही मुआनके[1] की मची है उलट-पलट
मिलते हैं दौड़-दौड़ के बाहम[2] झपट-झपट
फिरते हैं दिलवरों के भी गलियों में गट[3] के गट
आशिक मजे उड़ाते हैं हरदम लिपट लिपट
ऐसी न शब-बरात न बकरीद की खुशी
जैसी हर एक दिल को है इस ईद की खुशी

काजल हिना गजब मिसी-ओ-पान की घड़ी
पिशवाजें सुर्ख सौसनी, लाही की फुलझड़ी
कुरती कभी दिखा कभी अंगिया कसी कड़ी
कह "ईद-ईद" लूटें हैं दिल को घड़ी घड़ी
ऐसी न शब-बरात न बकरीद की खुशी
जैसी हर एक दिल को है इस ईद की खुशी

रोज़ों की सख्तियों में न होते अगर असीर[4]
तो ऐसी ईद की न खुशी होती दिल पिज़ीर[5]
सब शाद हैं गदा[6] से लगा शाह ता वज़ीर[7]
देखा जो हमने खूब तो सच है मियां 'नज़ीर'
ऐसी न शब-बरात न बकरीद की खुशी
जैसी हर एक दिल को है इस ईद की खुशी

○ ○ ○

---

१ गले मिलना २ आपस में ३ झुंड ४ कैद ५ आनंदकारी ६ भिखारी ७ बादशाह से मंत्री तक

होली

होली की बहार आयी फरहत[1] की खिली कलिया
बाजो की सदाओ[2] से कूचे भरे और गलिया
दिलवर से कहा हमने टुक छोडिए छलबलिया
अब रग गुलालो की कुछ कीजिए रगरलिया
होली मे यही धूमे लगती हैं बहुत भलिया[3]

है सब में मची होली अब तुम भी ये चरचा लो
रखवाओ अबीर ऐ जा ! और मय[4] को भी मगवालो
हम हाथ मे लोटा लें तुम हाथ में लुटिया लो
हम तुमको भिगो डालें तुम हमको भिगो डालो
होली मे यही धूमे लगती हैं बहुत भलिया

है तर्ज़ जो होली की उस तर्ज़ हँसो - बोलो
जो छेड है इशरत की अब तुम भी वही छेडो
हम डालें गुलाल ऐ जा ! तुम रग इधर छिडको
हम बोलें 'अहाहाहो' तुम बोलो 'उहोहोहो'
होली मे यही धूमे लगती हैं बहुत भलिया

इस दम तो मिया हम तुम इस ऐश की ठहरावें
फिर रग से हाथो मे पिचकारिया चमकावें
कपडो को भिगो डालें और ढग कई लावें
भीगे हुए कपडो से आपस मे लिपट जावें
होली मे यही धूमे लगती है बहुत भलिया

---

१ आनन्द २ आवाज़ो ३ भली ४ शराब

यह वक्त खुशी का है मत काम रखो रम[1] से
ले रग गुलाल ऐ जा ! और नाज़ के खमचम से
हस हस के बहम[2] लिपटें इस ऐश के आलम से
हम 'छोड' यह तुम से तुम 'छोड' कहो हम से
होली मे यही धूमे लगती है बहुत भलिया
कपडो पे जो आपस में अब रग पडे ढलकें
और पडके गुलाल ऐ जा ! रगी हो भवें पलकें
कुछ हाथ इधर तर हो कुछ भीगें उधर अलकें
हर आन हसें कूदें इशरत के मजे झलकें
होली मे यही धूमे लगती हैं बहुत भलिया
तुम रग इधर लाग्रो और हम भी उधर आवें
कर ऐश की तय्यारी धुन होली की बर लावें
और रग के छीटो की आपस मे जो ठहरावें
जब खेल चुकें होली फिर सीनो से लग जावें
होली मे यही धूम लगती हैं बहुत भलिया
इस वक्त मुहय्या[3] है सब ऐशो - तरब[4] की शै[5]
दफ बजते हैं हर जानिब और बीनो-रुबाबो-नै[6]
हो तुम मे भी और हममे होली की है जो कुछ रै[7]
सुनकर ये 'नज़ीर' उसने हस कर ये कहा "सच है
होली मे यही धूम लगती है बहुत भलिया"

० ० ०

---

१ भागना २ आपस म ३ प्रस्तुत ४ विलास ५ चीज ६ बीन, रुबाब और बासुरी ७ राय

आगरे की तैराकी

जब पैरने की रत मे दिलदार पैरते हैं
आशिक भी साथ उनके गमख्वार पैरते हैं
भोले सयाने नादा हुशियार पैरते हैं
पीरो - जवान लडके अय्यार पैरते हैं
अदना[1] गरीब मुफलिस[2] ज़रदार[3] पैरते हैं
इस आगरे मे क्या क्या ऐ यार पैरते हैं

बरसात मे जो आकर चढता है खूब दरिया
हर जा[4] पुरी व चादर, बन्द और नाद, चकवा
भेडा, भवर, उछालन, चक्कर, समेट, नाला
गेंडा गभीर, तख्ता, कस्सी, पछाड गर्दा
वा भी हुनर से अपने हुशियार पैरते हैं
इस आगरे मे क्या क्या ऐ यार पैरते हैं

तिरबेनी मे गहागह होती है क्या बहारें
खिलकत[5] के ठठ, हज़ारो पैराक की कतारें
पैरें, नहावें, उछलें, कूदें, लडें, पुकारे
ले ले वो छींट गोते खा खा के हाथ मारें
क्या क्या तमाशे कर कर इज़हार[6] पैरते हैं
इस आगरे मे क्या क्या ऐ यार पैरते हैं

जमना के पाट गोया सहने-चमन है बारे
पैराक उसमे पैरें जैसे कि चाद तारे

---

१ छोटे २ निधन ३ धनी ४ जगह ५ दुनिया
६ दिखाकर

मुह चाद के से टुकडे तन गोरे प्यारे प्यारे
परियो से फिर रहे है मझधार और किनारे
कुछ वार पैरते हैं कुछ पार पैरते है
इस आगरे मे क्या क्या ऐ यार पैरते हैं
कितने खडे है पैरें अपना दिखा के सीना
मीना चमक रहा है हीरे का ज्यू नगीना
आधे बदन पे पानी आधे पे है पसीना
सर्वों[1] का बह चला है गोया कि इक करीना[2]
दामन कमर पे, बाधे दस्तार[3] पैरते है
इस आगरे मे क्या क्या ऐ यार पैरते हैं
जाते है इनमे कितने पानी पे साफ सोते
कितनो के हाथ पिंजरे कितनो के सर पे तोते
कितने पतग उडाते कितने सुई पिरोते
हुक्को का दम लगाते हस हस के शाद होते
सौ सौ तरह का कर कर विस्तार परते है
इस आगरे मे क्या क्या ऐ यार पैरते हैं
कुछ नाच की बहारें पानी के कुछ किनारे
दरिया मे मच रहे हैं इन्दर के सौ अखाडे
लबरेज़[4] गुलरुखों[5] से दोनो तरफ कगारे
बजरे व नाव चप्पू डोगे बने निवाडे

---

१ सर्व ईरान का एक सीधा और सुन्दर वृक्ष होता है २ पक्ति
३ पगडी ४ भरे हुए ५ सुन्दर व्यक्तियो

इन जमघटों से होकर सरशार पैरते हैं
इस आगरे में क्या क्या ऐ यार पैरते हैं

नावों में वह जो गुल-रू[1] नाचों में छा रहे हैं
जोड़े बदन में रंगी, गहने झमक रहे हैं
तानें हवा में उड़ती तबले खड़क रहे हैं
ऐशो तरब[2] की धूम, पानी छपक रहे हैं
सौ ठाठ से बनाकर अतवार[3] पैरते हैं
इस आगरे में क्या क्या ऐ यार पैरते हैं

हर आन बोलते हैं सय्यद कबीर की जै
फिर इसके बाद अपने उस्ताद पीर की जै
मोरो-मुकुट कन्हैया जमुना के तीर की जै
फिर गोल के सब अपने खुर्दो कबीर[4] की जै
हर दम ये कर खुशी की गुफ्तार पैरते हैं
इस आगरे में क्या क्या ऐ यार पैरते हैं

क्या क्या 'नज़ीर' या के हैं पैरने के बानी[5]
है जिनके पैरने की मुल्कों में आन मानी
उस्ताद और खलीफा शागिद यारे जानी
सब खुश रहे, है जब तक जमुना के बीच पानी
क्या क्या हंसी-खुशी से हर बार पैरते हैं
इस आगरे में क्या क्या ऐ यार पैरते हैं

० ० ०

१ सुंदरियों २ रास रंग ३ ढंग ४ छोटे-बड़े ५ आविष्कारक

रीछ का बच्चा

कल राह मे जाते जो मिला रीछ का बच्चा
ले आये वही हम भी उठा रीछ का बच्चा
सौ नेग्रमते खा-खाके पला रीछ का बच्चा
जिस वक्त बडा रीछ हुआ रीछ का बच्चा
जब हम भी चले साथ चला रीछ का बच्चा

था हाथ म इक अपने मवा मन का जो सोटा
लोहे की कडी जिसपे खडकती थी सरापा[1]
कांधे पे चढा झोलना और हाथ म प्याला
बाजार मे ले आये दिखाने को तमाशा
आगे तो हम और पीछे था वह रीछ का बच्चा

था रीछ के बच्चे के वो गहना जो सरासर
हाथो में कडे सोने के बजते थे झमक कर
कानो मे दुर[2] और घुघरू पडे पाव के अदर
वह डोर भी रेशम की बनाइ थी जो पुर-ज़र[3]
जिस डोर से यारो था वधा रीछ का बच्चा

झुमके वो झमकते थे पडे जिसपे करनफूल
मुक्कीश[4] की लडियो की पडी पीठ ऊपर भूल
और उनके सिवा कितने बिठाये थे जो गुलफूल
यू लोग गिरे पडते थे सर-पाव की सुध भूल
गोया वो परी था कि न था रीछ का बच्चा

---

१ ऊपर से नीचे तक २ मोती ३ सोने के काम की ४ सोने-चादी के तारो के काम की

इक तरफ को थी सैंकडो लडको की पुकारें
इक तरफ को थी पीरो-जवानो की कतारें
कुछ हाथियो की कीक और ऊटो की डकारें
गुल, शोर, मजे, भीड, ठट्ठ, अम्बोह[1], वहारें
जब हमने किया लाके खडा रीछ का बच्चा
कहता था कोई हमसे "मिया आओ कलन्दर[2]
वह क्या हुए अगले वो तुम्हारे थे वो ब"दर"
हम उनसे ये कहते थे, "ये पेशा है कल"दर
हा छोड दिया बाबा उन्हे जगले[3] के अ"दर
जिस दिन से खुदा ने ये दिया रीछ का बच्चा
मुद्दत मे अब इस बच्चे को हमने है सधाया
लडने के सिवा नाच भी है इसको सिखाया"
यह कहके जो ढपली के तई गत पे बजाया
इस ढब से उसे चौक के जमघट मे नचाया
जो सब की निगाहो मे खुबा रीछ का बच्चा
फिर नाच के वह राग भी गाया तो वहा वाह
फिर वह रवा नाचा तो हर इक बोली जबा "वाह"
हर चार तरफ सेती[4] कहे पीरो-जवा "वाह"
सब हसके ये कहते थे "मिया वाह, मिया वाह,
क्या तुमने दिया खूब नचा रीछ का बच्चा"
जब कुश्ती की ठहरी तो वही सर को जो झाडा
ललकारते ही उसने हमे आन लताडा

१ भीड २ फकीर ३ जगल ४ मे

गह[1] हमने पछाडा उसे, गह उसने पछाडा
इक डेढ पहर फिर हुआ कुश्ती का अखाडा
गो हम भी न हारे न हटा रीछ का बच्चा
यह दाँव म पेचो मे जो कुश्ती के हुइ देर
यू पडते रुपे पैसे कि आधी मे गोया बेर
सब नक्द हुए आके सवा लाख रुपे ढेर
जो कहता था हर इक से इसी तरह से मुह फेर
"यारो तो लडा देखो जरा रीछ का बच्चा"
कहता था खडा जो कोई कर आह, "अहा हा
इसके तुम्ही उस्ताद हो वल्लाह[2] अहा हा
यह सहर[3] किया तुमने तो नागाह[4] अहा हा
क्या कहिए गरज आखिरश, ऐ वाह अहा हा
ऐसा तो न देखा न सुना रीछ का बच्चा"
जिस दिन से 'नज़ीर' अपने तो दिलशाद यही हैं
जाते हैं जिधर को उधर इरशाद यही हैं
सब कहते हैं, वह साहबे इजाद[5] यही हैं
क्या देखते हो तुम खडे ? उस्ताद यही हैं
कल चौक म था जिनका लडा रीछ का बच्चा"

० ० ०

---

१ कभी २ ईश्वर की सौगध ३ जादू ४ अचानक
५ आविष्कारक

बचपन

क्या दिन थे यारो वह भी थे जब कि भोले भाले
निकले थी दाइ लेकर फिरती कभी दिदा[1] ले
चोटी कोई रखाले बद्धी कोइ पिन्हा ले
हमली गले मे डाले, मिन्नत कोई बढा ले
मोटे हो या कि दुबले गोरे हो या कि काले
क्या ऐश लूटते है मासूम भोले भाले

दिल मे किसी के हरगिज़ नै[2] ग़म नै हया है
आगा भी खुल रहा है पीछा भी खुल रहा है
पहने फिरे तो क्या है नगे फिरे तो क्या है
या यू भी वाह वा है और वू भी वाह-वा है
कुछ खाले इस तरह से कुछ उस तरह से खाले
क्या ऐश लूटते हैं मासूम भोले भाले

मर जाये कोई तो भी कुछ उनका गम न करना
नै जाने कुछ बिगडना नै जाने कुछ सवरना
उनकी बला से घर म हो कैद या कि घिरना
जिस बात पर ये मचले फिर वह ही कर गुज़रना
मा ओढनी को, बाबा पगडी को बेच डालें
क्या ऐश लूटते हैं मासूम भोले भाले

---

[1] बुज़ुर्ग नौकरानी [2] न

जो कोई चीज़ देवे नित हाथ ओटते है
गुड, बेर, मूली, गाजर सब मुह मे घोटते है
बावा की मोछ, मा की चोटी खसोटते हैं
गर्दों म अट रहे ह खाको मे लोटते है
कुछ मिल गया सो पीले कुछ बन गया सो खाले
क्या ऐश लूटते है मासूम भोले भाले

जो उनको दो सा खालें फीका हो या सलोना
है बादशह से बेहतर जब मिल गया खिलौना
जिस जा पे[1] नीद आई फिर वा ही उनको सोना
परवा न कुछ पलग की नै चाहिए बिछौना
भोपू कोई बजाले फिरकी कोइ फिरा ले
क्या ऐश लूटते है मासूम भोले भाले

यह बालेपन का यारो आलम अजब बना है
यह उम्र वह है इसम जो है सो बादशा है
और सच अगर्चे पूछो तो बादशा भी क्या है
अब तो 'नज़ीर' मेरी सबको यही दुआ है
जीतें रहे सभो के आसो-मुराद वाले
क्या ऐश लूटते हैं मासूम भोले भाले

◇ ◇ ◇

---

१ जगह

जवानी

क्या ऐश की रखती है सब आहग[1] जवानी
करती है बहारो के तई दग जवानी
हर आन पिलाती है मै[2] और भग जवानी
करती है कही सुलह कही जग जवानी
इस ढब के मजे रखती है और ढग जवानी
आशिक को दिखाती है अजब रग जवानी

अल्ला ने जवानी का वो आलम है बनाया
जो हर कही आशिक, कही रुसवा, कही शैदा[3]
फन्दे मे कही जो है कही दिल है तडपता
मरते हैं, सिसकते हैं, बिलखते हैं अहा-हा
इस ढब के मजे रखती है और ढग जवानी
आशिक को दिखाती है अजब रग जवानी

लडती है कही आख, कही दिष्ट[4], कही सैन
झूठा है कही प्यार किसी से हैं लगे नैन
वादा कही, इकरार कही, सन कही नैन
नै[5] जी को फरागत[6] है न आँखो के तई चैन
इस ढब के मजे रखती है और ढग जवानी
आशिक को दिखाती है अजब रग जवानी

उल्फत है कही, मेह्रो-मुहब्बत है कही चाह
करता है कोई चाह कोई देख रहा राह

---

१ आवाज २ शराब ३ आसक्त ४ दृष्टि ५ न ६ छुटकारा

साक़ी है, सुराही है, परीज़ाद हैं हमराह[1]
क्या ऐश हैं, क्या ऐश हैं, क्या ऐश हैं वल्लाह
इस ढब के मज़े रखती है और ढंग जवानी
आशिक को दिखाती है अजब रंग जवानी

गर रात किसी पास रहे ऐश मे ग़लतान[2]
और वा से किसी और से मिलने का हुआ ध्यान
घबरा के उठे जब तो गिरे पाँव पे हर आन
कहती है "हमें छोड़ के जाते हो किधर जान ?"
इस ढब के मज़े रखती है और ढंग जवानी
आशिक को दिखाती है अजब रंग जवानी

रस्ते में निकलते है तो होती है ये चाह
वह शोख, कि हों बन्द जिन्हें देख के राह
खाते हैं कोई हँसके कोई भरती है आहें
पड़ती हैं हर इक जा[3] से निगाहों पे निगाह
इस ढब के मज़े रखती है और ढंग जवानी
आशिक को दिखाती है अजब रंग जवानी

जाते हैं तवाइफ़[4] में तो वा होती है यह चाव
कहती है कोई इनके लिए पान बना लाओ
कोई कहती है "या बैठो", कोई कहती है "या आओ"
नाचे है कोई शोख बताती है कोई भाव
इस ढब के मज़े रखती है और ढंग जवानी
आशिक को दिखाती है अजब रंग जवानी

---

१ साथ २ लोटते ह ३ जगह ४ वेश्याओं

हँस-हँस के कोई हुस्न की छलबल है दिखाती
मिस्सी कोई सुरमा कोई काजल है दिखाती
चितवन की लगावट कोई चंचल है दिखाती
कुरती कोई अंगिया कोई काजल है दिखाती
इस ढब के मज़े रखती है और ढंग जवानी
आशिक को दिखाती है अजब रंग जवानी

कहती है कोई, "रात मेरे पास न आये"
कहती है कोई, "हमको भी खातिर में न लाये"
कहती है कोई, "किसने तुम्हें पान खिलाये ?"
कहती है कोई, "घर को जो जाये हमें खाये"
इस ढब के मज़े रखती है और ढंग जवानी
आशिक़ को दिखाती है अजब रंग जवानी

क्या तुमसे 'नज़ीर' अब मैं जवानी की कहूं बात
इस सिन[1] में गुज़रती है अजब ऐश से औक़ात
महबूब[2] परीज़ाद चले आते हैं दिन-रात
सैरें हैं, बहारें हैं, तवाज़े हैं, मुदारात[3]
इस ढब के मज़े रखती है और ढंग जवानी
आशिक को दिखाती है अजब रंग जवानी

० ० ०

---

१ अवस्था २ प्रियतम ३ सत्कार

बुढापा

क्या कहर है यारो जिसे आजाए बुढापा
और ऐशे-जवानी के तई खाए बुढापा
इशरत को मिला खाक मे ग़म लाए बुढापा
हर काम को हर बात को तरसाए बुढापा

सब चीज़ को होता है बुरा हाय बुढापा
आशिक को तो अल्लाह न दिखलाय बुढापा

आगे तो परीज़ाद ये रखते थे हम घेर
आते थे चले आप जो लगती थी ज़रा देर
सो आके बुढापे ने किया हाय ये अधेर
जो दौड के मिलते थे वो अब लेते हैं मुह फेर

सब चीज़ को होता है बुरा हाय बुढापा
आशिक को तो अल्लाह न दिखलाय बुढापा

मजलिस मे जवानो की तो सागर[1] हैं छलकते
चुहले हैं, वहारें हैं, परीरू[2] हैं झमकते
हम उनके तई दूर से हैं रश्क[3] से तकते
वह ऐशो-तरब[4] करते है हम सर हैं पटकते

सब चीज़ को होता है बुरा हाय बुढापा
आशिक को तो अल्लाह न दिखलाय बुढापा

---

१ (शराब के) प्याले २ सुदरिया ३ ईर्ष्या ४ रास रग

थे हम भी जवानी मे बहुत इश्क के पूरे
वह कौन से गुल-रू[1] है जो हमने नही घूरे
अब आके बुढापे ने किये ऐसे अधूरे
पर झड गये, दुम उड गयी, फिरते हैं लँडूरे

सब चीज को होता है बुरा हाय बुढापा
आशिक को तो अल्लाह न दिखलाय बुढापा

क्या यारो उलट हमसे गया हाय ज़माना
जो शोख कि थे अपनी निगाहो का निशाना
छेड़े है कोई डाल के दादा का बहाना
कोई ये कहे है कि "कहा जाते हो नाना ?"

सब चीज़ को होता है बुरा हाय बुढापा
आशिक को तो अल्लाह न दिखलाय बुढापा

बूढो मे अगर जावे तो लगता नही वा दिल
वा क्योंकि लगे ? दिल तो है महबूबो[2] का मायल
महबूबो म जावें है तो सब छेडें है मिल मिल
क्या सख्त मुसीबत है पडो आनके मुश्किल

सब चीज़ को होता है बुरा हाय बुढापा
आशिक को तो अल्लाह न दिखलाय बुढापा

पाधट तो हमारी अगर असवारी गयी है
ता वा भी लगो साथ यही ख्वारी गयी है

---

१ सुन्दरियां २ प्रेमसियां

सुनते हैं कि कहती हुई पनिहारी गयी है
"लो देखो बुढापे म ये मत मारी गयी है"
सब चीज़ को होता है बुरा हाय बुढापा
आशिक को तो अल्लाह न दिखलाय बुढापा

दरिया के तमाशे को अगर जायें तो यारो
कहता है हर-इक देख के "जाते हो कहा को ?".
और हँस के शरारत से कोई पूछे है बद ख़ू[1]
"क्यो, ख़ैर है ? क्या ख़िज़र[2] से मिलने को चले हो ?'
सब चीज़ को होता है बुरा हाय बुढापा
आशिक को तो अल्लाह न दिखलाय बुढापा

गर नाच में जावें तो ये हसरत है सताती
जो नाचे है काफिर वो नही ध्यान मे लाती
औरो की तरफ जावे तो आखें है लडाती
पर हमको तो काफिर वो अगूठा है दिखाती
सब चीज़ को होता है बुरा हाय बुढापा
आशिक को तो अल्लाह न दिखलाय बुढ़ापा

गर नायका उनमें कोई बूढी है कहाती
अलबत्ता बुढापे पे वो टुक रहम है खाती
फीकी-सी पुरानी-सी लगावट है जताती
पर कहर है हमको वो ज़रा खुश नही आती[3]

---

१ दुष्ट २ पानी के अदृश्य देवता ३ अच्छी नही लगती

सब चीज को होता है बुरा हाय बुढापा
आशिक को तो अल्लाह न दिखलाय बुढापा

थे जैसे जवानी मे किये धूम - धडक्के
वैसे ही बुढापे मे छुटे आन के छक्के
सब उड गये काफिर वो नजारे वो झमक्के
अब ऐश जवानो को है और बूढो को धक्के
सब चीज को होता है बुरा हाय बुढापा
आशिक को तो अल्लाह न दिखलाय बुढापा

यह होठ जो अब पोपले यारो हैं हमारे
इन होठो ने बोसो के बडे रग हैं मारे
होते थे जवानी मे तो परियो के गुज़ारे
और अब तो चुडैल आन के इक लात न मारे
सब चीज़ को होता है बुरा हाय बुढापा
आशिक को तो अल्लाह न दिखलाय बुढापा

करते थे जवानी मे तो सब आप से[1] आ चाह
और हुस्न दिखाते थे वो सब आन के दिल रुवाह[2]
यह कहर बुढापे ने किया आह 'नज़ीर' आह
अब कोई नही पूछता अल्लाह ही अल्लाह
सब चीज़ को होता है बुरा हाय बुढापा
आशिक को तो अल्लाह न दिखलाय बुढापा

० ० ०

---

१ स्वय ही २ मनमोहक

मौत का धड़का

दुनिया के बीच यारो सब ज़ीस्त[1] का मज़ा है
जीतों के वास्ते ही यह ठाठ सब बना है
जब मर गये तो आख़िर सब उम्र ख़ाके पा[2] है
नै[3] बाप है न बेटा नै यार आशना है
डरती है रूह यारो और जी भी कांपता है
मरने का नाम मत लो मरना बुरी बला है

है दम की बात जो थे मालिक थे अपने घर के
जब मर गये तो हरगिज़ घर के रहे न दर के
यूँ मिट गये कि गोया थे नक्श[4] रहगुज़र[5] के
पूछा न फिर किसी ने यह थे मियाँ किधर के
डरती है रूह यारो और जी भी कांपता है
मरने का नाम मत लो मरना बुरी बला है

मरने के बाद उल्फ़त कोई न फिर जतावे
नै पास बेटा आवे नै भाई मुंह लगावे
जो देखे उनकी सूरत दहशत से भाग जावे
इस मर्ग[6] की जफ़ाएं[7], क्या क्या नहीं बतावे
डरती है रूह यारो और जी भी कांपता है
मरने का नाम मत लो मरना बुरी बला है

---

१ ज़िन्दगी २ पांवों की धूल ३ न ४ चिह्न ५ रास्ता
६ मौत ७ निष्ठुरताएं

जब रूह तन से निकली आना नही यहा फिर
काहे को देखने हैं यह बागो-बोस्ता[1] फिर
हाथी पे चढके या फिर, घोडे पे चढके वा फिर
जब मर गये तो लोगो यह इशरतें कहा फिर
डरती है रूह यारो और जी भी कापता है
मरने का नाम मत लो मरना बुरी बला है

घर हो बहिश्त जिसका और भर रही हो दौलत
असबाब इशरतो के महबूब[2] खूबसूरत
फिर मरते वक्त उनको क्योकर न होवे हसरत
क्या सख्त बेबसी है क्या सख्त है मुसीबत
डरती है रूह यारो और जी भी कापता है
मरने का नाम मत लो मरना बुरी बला है

खाने को उनके नेअमत सौ सौ तरह की आती
और वह न पावें टुकडा देखो टुक उनकी छाती
कौडी की झोपडी भी छोडी नही है जाती
लेकिन 'नजीर' सब कुछ यह मौत है छुडाती
डरती है रूह यारो और जी भी कापता है
मरने का नाम मत लो मरना बुरी बला है

० ० ०

---

१ बाग़ २ प्रियतम

बरसात की बहारें

हैं इस हवा मे क्या क्या बरसात की वहारें
सब्ज़ो की लहलहाहट बागात[1] की वहारें
बून्दो की झमझमाहट कतरात[2] की वहारें
हर ग्रात के तमाशे हर घात की बहारें
क्या क्या मची है यारो बरसात की बहार

बादल हवा के ऊपर हो मस्त छा रहे हैं
झडियो की मस्तियो से धूमे मचा रहे है
पडते हैं पानी हर जा[3] जल-थल बना रहे है
गुलजार भीगते हैं सब्ज़े नहा रहे हैं
क्या क्या मची है यारो बरसात की बहारें

मारे हैं मौज[4] डाबर दरिया उमड रहे है
मोर-ओ-पपीहे कोयल क्या क्या उमड़ रहे हैं
झड कर रही हैं झडिया नाले उमड रहे हैं
बरसे है मेह झडाझड बादल घुमड रहे हैं
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

फूलो की सेज ऊपर सोते हैं कितने बन बन
सोहें गुलाबी जूडे फूलो के हार ग्रबरन
कितनो को घर है खाता सूना लगे जो ग्रागन
कोने म पड रही है सर मुह लपेट सोगन[5]
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

१ बागो २ बूदो ३ जगह ४ लहर ५ विरहिणी

जो खुश है वह खुशी मे काटे है रात सारी
जो गम मे हैं उन्ही पर गुज़रे है रात भारी
सीनो से लग रही है जो है पिया की प्यारी
छाती फटे है उनकी जो है बिरह की मारी
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

अब बिरहनो के ऊपर है सख्त बेकरारी
हर बूंद मारती है सीने उपर कटारी
बदली की देख सूरत कहती हैं बारी बारी
"है है[1] न ली पिया ने अब के भी सुध हमारी"
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

गाती हैं गीत कोई झूले पे करके फेरा
"मारू जी ! आज कीजे या रैन का बसेरा"
है खुश कोई, किसी को है दर्दो गम ने घेरा
मुह ज़र्द, बाल बिखरे और आखो मे अधेरा
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

और जिनको अब मुहय्या[2] हुस्नो की ढरिया हैं
सुर्ख और सुनहरे कपडे, इशरत की घेरिया हैं
महबूब दिलबरो की जुल्फे बिखेरिया हैं
जुगनू चमक रहे हैं रातें अघेरिया हैं
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

---

१ हाय-हाय २ प्रस्तुत

कितनो को महलो अन्दर है ऐश का नज़ारा
या सायबान सुथरा या बाम का ओसारा
करता है सैर कोई कोठे का ले सहारा
मुफ़लिस[1] भी कर रहा है पूले तले गुज़ारा
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

छत गिरने का किसी जा गुल-शोर हो रहा है
दीवार का भी धडका कुछ होश खो रहा है
डर डर हवेली वाला हर आन रो रहा है
मुफ़लिस सो झोपडे में दिलशाद[2] सो रहा है
क्या क्या मची है यारो बरसात की बहारें

मुद्दत से हो रहा है जिनका मका पुराना
उठकर है उनको मेह मे हर आन छत पे जाना
कोई पुकारता है, "टुक मोरी खोल आना"
कोई कहे है, "चल भी क्यो हो गया दीवाना"
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

सब्ज़ो पे बीर बहूटी टीलो उपर धतूरे
पिस्सू से मच्छडो से रोये कोई बिसूरे
बिच्छू किसी को काटे कीडा किसी को घूरे
आगन मे कनसलाई कोनो मे कनखजूरे
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

---

१ गरीब २ प्रसन्न

फुसी किसी के तन में सर पर किसी के फोडे
छाती पे गर्मी दाने और पीठ मे ददोडे
खा पूरिया किसी को हैं लग रहे मरोडे
आते है दस्त जैसे दौडें इराकी घोडे
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

कितने शराब पीकर हो मस्त छक रहे हैं
मैं[1] की गुलाबी आगे प्याले छलक रहे हैं
होता है नाच घर घर घुघरू झनक रहे है
पडता है मेह झडाझड तबले खडक रहे हैं
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

हैं जिनके तन मुलायम मैंदे की जैसे लोई
वह इस हवा मे खासी ओढे फिरें हैं लोई
और जिनकी मुफलिसी ने शर्मो हया है खोई
है उनके सर पे सिरकी या बोरिये की खोई
क्या क्या मची है यारो बरसात की बहारें

जो इस हवा मे यारो दौलत मे कुछ बडे है
है उनके सर पे छतरी हाथी उपर चढे है
हमसे गरीब गुरबा कीचड मे गिर पडे हैं
हाथो में जूतिया हैं और पायचे चढे हैं
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

१ शराब

है जिन कने[1] मुहय्या पक्का पकाया खाना
उनको पलग पे बैठे झडियो का हिज्र[2] उठाना
है जिनको अपने घर का या नून तेल लाना
है सर पे उनके पखा या छाज है पुराना
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

कीचड से हो रही है जिस जा जमी फिसलनी
मुश्किल हुई है वा से हर इक को राह चलनी
फिसला जो पाव पगडी मुश्किल है फिर सभलनी
जूती गडी तो उनसे क्या ताब[3] फिर निकलनी
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

कितने तो दलदलो की कीचड से फस रहे है
कपडे तमाम गदे दलदल मे बस रहे है
कितने उठे हैं मर मर कितने उकस रहे हैं
वह दुख मे फस रहे हैं और लोग हँस रहे हैं
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

यह रुत वो है कि जिसमे खुर्दो कबीर[4] खुश हैं
अदना[5] , गरीब, मुफलिस शाहो वजीर खुश हैं
माशूक शादो खुरम[6] आशिक असीर[7] खुश हैं
जितने है अब जहा मे सब ऐ 'नजीर' खुश हैं
क्या क्या मची है यारो बरसात की बहारें

---

१ पास २ मजा ३ ताकत ४ छोटे बड ५ छोटे ६ प्रसन्न
७ (प्रेम के) बदी

कोरा बरतन

कोरे बरतन ह क्यारी गुलशन की
जिससे खिलती है हर कली तन की
बूद पानी की उनमे जब सनकी
क्या वो प्यारी सदा[1] है मन-सन की
ताजगी जी की और तरी तन की
वाह क्या बात कोरे बरतन की

कोरा पनिहारी का जो है मटका
उसका जोबन कुछ और ही मटका
ले गया जान पाव का खटका
दिल घडे की तरह से दे पटका
ताजगी जी की और तरी तन की
वाह क्या बात कोरे बरतन की

कोरे क़ूज़ो[2] को देख आलम मे
कूज़े मिसरी के भर गये गम मे
यू वो रिसते हैं आब[3] के नम[4] म
जसे डूबे हो फूल शबनम मे
ताजगी जी की और तरी तन की
वाह क्या बात कोरे बरतन की

---

१ आवाज २ प्याला ३ पानी ४ तरा

जिस सुराही मे सर्द पानी है
मोती की ग्राब पानी पानी है
ज़िन्दगी की यही निशानी है
दोस्तो यह भी बात मानी है
ताजगी जी की और तरी तन की
वाह क्या बात कोरे बरतन की

जितने नज़रो नियाज़[1] करते है
और जो पीरो से अपने डरते ह
जब किला फूल पान धरते ह
वह भी कोरी ही ठिलिया भरते ह
ताज़गी जी की और तरी तन की
वाह क्या बात कोरे बरतन की

कोरो पर जो 'नज़ीर' जोबन है
जोजरे[2] म कहा वो खनखन है
जिस घड़ौंची पे कोरा बासन है
वह घड़ौंची नही है गुलशन है
ताज़गी जी की और तरी तन की
वाह क्या बात कोरे बरतन की

० ० ०

१ भेंट-पूजा २ पुराना बरतन

तिल के लड्डू

जाडा मे फिर खुदा ने खिलवाये तिल के लड्डू
हर एक ख्वाचे मे दिखलाये तिल के लड्डू
कूचे गली मे हर जा[1] बिकवाये तिल के लड्डू
हमको भी दिल से हैंगे खुश आये तिल के लड्डू
जीते रहे तो यारो फिर खाये तिल के लड्डू

उमदो[2] ने सौ तरह की याकूतिया[3] बनायी
लौंगो मे दारचीनी शक्कर भी ले मिलायी
गर्दी मे दौलतो की सौ गम चीजें खायी
औरो ने डाल मिश्री मौ पैडिया बनायी
हमने भी गुड मगाकर बधवाये तिल के लड्डू

रख ख्वाचे के रसकर पैकार[4] यू पुकारा
बादाम-भूना चावो और कुरकुरा छुहारा
जाडा लगे तो इसका करता हू मै इजारा[5]
जिसका कलेजा यारो सर्दी ने होवे मारा
नौ दाम के वो मुझसे ले जाये तिल के लड्डू

जाडा तो अपने दिल मे था पहलवा झुझाडा
पर एक दिल ने उसको रगरग से है उखाडा
जिस दम दिलो जिगर को सर्दी ने आ लताडा
खम ठोक यूँ ही हमने जाडे को घर पछाडा
तन फेर ऐसा भभका जब खाये तिल के लड्डू

---

१ जगह २ अमीरो ३ बतरिया, बर्फिया ४ फेरी वाला
५ जिम्मेदारी लेना

कल यार से जो अपने मिलने तईं गये हम
कुछ पेड़े उसकी ख़ातिर खाने को ले गये हम
महबूब[1] हस के बोला, हैरत मे हो रहे हम
"पेडो को देख दिल म ऐसे खुशी हुए हम
गोया हमारी खातिर तुम लाये तिल के लड्डू"

जब उस सनम[2] के मुझको जाडे का ध्यान आया
सब सौदा थोडा थोडा बाज़ार से मगाया
आगे जो लाके रक्खा कुछ उसको खुश न आया
चीज़ें तो वह बहुत थी पर उसने कुछ न खाया
तब खुश हुआ वो, उसने जब पाये तिल के लड्डू

जाडे मे जिसको हरदम पेशाब है सताता
उठिए तो जाडा लिपटे, नही मूत निकला जाता
उनकी दवा भी कोई पूछो हकीम से जा
बतलाये कितने नुसखे पर एक बन न आया
आख़िर इलाज उसका ठहराये तिल के लड्डू

जाडे मे अब जो यारो यह तिल गये हैं भूने
महबूबो के भी तिल से उनके मजे है दूने
दिल ले लिया हमारा तिल-शकरियो के रू[3] ने
यह भी 'नज़ीर' लड्डू ऐसे बनाये तूने
सुन सुन के जिनकी लज्जत घबराये तिल के लड्डू

---

१ प्रियतम २ प्रियतम ३ चहरा

भग

दुनिया के अमीरो मे या किसका रहा डका
बरबाद हुए लशकर फौजो का थका डका
आशिक तो ये समझे हैं गब दिल म बना डका
जो भग पियें उनका बजता है सदा डका
कूडी के नकारे पर खतके का लगा डका
नित भग पी और आशिक दिन रात बजा डका

उल्फत के जमरुद[1] की यह खेत की बूटी है
पत्तो की चमक उसके कमस्वाब की बूटी है
मुह जिसके लगी उससे फिर काहे को छूटी है
यह तान टिकोरे की इस बात पे टूटी है
कूडी के नकारे पर खतके का लगा डका
नित भग पी और आशिक दिन रात बजा डका

हर आन खडाके से इस ढब का लगा रगडा
जो सुनके खडक उसकी हो बन्द सभी दगडा
चक्कान चढा गहरा और बाध हरा पगडा
क्या सैर की ठहरेगी, टुक छोडके यह झगडा
कूडी के नकारे पर खतके का लगा डका
नित भग पी और आशिक दिन रात बजा डका

---

१ पुखराज

इक प्याले के पीते ही हो जायेगा मतवाला
आखो मे तेरी आकर खिल जायेगा गुल्लाला
क्या-क्या नज़र आवेगी हरियाली व हरियाली
आ, मान कहा मेरा, ऐ शोख मये लाला
कूडी के नकारे पर खतके का लगा डका
नित भग पी और आशिक दिन रात बजा डका

है मस्त वही पूरे जो कूडी के अदर हैं
दिल उनके बडे दरिया जी उनके समन्दर हैं
बैठे हैं सनम[1] बुत हो और झूमत मदिर हैं
कहते हैं यही हस-हस आशिक जो कलदर[2] है
कूडी के नकारे पर खतके का लगा डका
नित भग पी और आशिक दिन रात बजा डका

मव छोड नशा प्यारे पीवे तू अगर सब्जी[3]
कर जावे वही तेरी खातिर[4] मे असर सब्ज़ी
हर बाग मे हर जा[5] म आजावे नज़र सब्ज़ी
तेरी भी 'नज़ीर' अब तो सब्जो मे है मरसब्ज़ी
कूडी के नकारे पर खतके का लगा डका
नित भग पी और आशिक दिन रात बजा डका

० ० ०

---

१ मूर्तियां २ मस्त फकीर ३ भग ४ दिल ५ जगह

मौत

दुनिया मे अपना जो कोई वहला के मर गया
दिल तगियो से और कोइ उकता के मर गया
आकिल[1] था वह तो आप[2] को समझा के मर गया
बे-अक्ल छाती पीट के घवरा के मर गया
दुख पाके मर गया कोइ सुख पाके मर गया
जीता रहा न कोइ हर-इक आके मर गया

दिन रात दुन मची है यहा और पडे है जग
चलती है नित अजल[3] की सना[4] गोली और तुफग[5]
जिसका कदम बढा वो मुआ वू ही बे - दिरग[6]
जो जी छुपा के भागा तो उसका हुआ ये रग
वह भागने मे तेगो - तबर[7] खाके मर गया
जीता रहा न कोइ हर इक आके मर गया

गर लाख इशरतो से है दिल म ये धूमधाम
या सौ मुसीबतो से हुआ गम का अजदहाम[8]
आखिर को जब अजल ने किया आन कर सलाम
गम मे किसी हसी के कोइ हो गया तमाम
कोई हूर परिया छाती से लिपटा के मर गया
जीता रहा न कोई हर इक आके मर गया

---

१ बुद्धिमान २ स्वय ३ मौत ४ भाला ५ बदूक ६ तुरत ७ तलवार और फरसा ८ भीड

पढ़कर नमाज कोई रहा पाक बा-वज़ू[१]
कोई शराब पीके रहा मस्त कू-ब-कू[२]
नापाको पाको मौत के ठहरी न रू-ब रू[३]
कोई इबादतो[४] से मुग्रा होके सुर्ख-रू[५]
नापाक रू-सियाह[६] भी पछता के मर गया
जीता रहा न कोई हर इक आके मर गया
बिटफज गर किसी को हुई याद कीमिया[७]
या मुफलिसी[८] म एक ने खूने-जिगर पिया
कोई जियादा उम्र से इक दम[९] नही जिया
सूखी किसी ने रोटी चबा गम मे जी दिया
कलिया पुलाव जर्दा कोइ खा के मर गया
जीता रहा न कोइ हर इक आके मर गया
पहना लिबासे-खूब अगर इत्र का भरा
या चीथडो की गुदडी कोइ ओढकर मरा
आखिर को जब अजल की चली आनकर हवा
पूले के झोपडे को कोइ छोडकर चला
बागो मका महल कोई बनवा के मर गया
जीता रहा न कोई हर इक आके मर गया
गर एक बे-वकार[१०] हुआ एक कद्रदार
मर पर लगा जब आन के तेगे-अजल का वार

---

१ पवित्र २ गली-गली मे ३ सामन ४ उपासनाओं ५ नेक-नाम ६ बदनाम ७ रसायन जिसमे ताँबे को सोना बना लिया जाता है ८ निधनता ९ सास १० सम्मान रहित

बेकद्री काम आयी किसी का न कुछ वकार
था बेहया सो वह तो मुआ खोके नगो-आर[1]
और जिसको शर्म थी सो वो शर्मा के मर गया
जीता रहा न कोई हर इक आके मर गया

कोई ठुड्डी[2] चाबता था कोई मोठ और मटर
जिस दम कज़ा ने हाथ में ली तेग और सिपर[3]
काम आयी कुछ फ़क़ीरी न कुछ तख़्त और छतर
यह ख़ाक पर मुआ वो मुआ तख़्त के उपर
थी जिसकी जैसी क़द्र वो बतला के मर गया
जीता रहा न कोई हर इक आके मर गया

कितनो में बढ के ऐसी बढी उल्फ़तो की चाह
जो जिस्मो - जान एक हुए उनके वाह वाह
आशिक़ मुआ तो मर गया माशूक़ ख़ामख़्वाह
माशूक़ मर गया तो वो आशिक़ भी करके आह
उस गुल-बदन[4] की क़ब्र उपर जाके मर गया
जीता रहा न कोई हर इक आके मर गया

क्या काले पीले शक्ल के क्या गोरे गुल-अज़ार[5]
आशिक कोई है और कोई माशूक़ तरहदार
आकिल, हकीम-ओ आमिलो-फाज़िल[6] रिसालदार
पंडित, नजूमी[7], बैद, चे[8] दाना[9] चे होशियार

---

१ शम २ एक मोटा अनाज ३ ढाल ४ सुंदर ५ फूल-से मुखडे वाले ६ राज्य अधिकारी और विद्वान ७ ज्योतिषी ८ क्या ९ बुद्धिमान

दो दिन की शान हर कोई दिखला के मर गया
जीता रहा न कोई हर इक आके मर गया

क्या ओछी जातपात के, अशराफ़[1] क्या नजीब[2]
क़िस्मत से फूटी कौड़ी किसी को न हो नसीब
जिस दम क़ज़ा के हाथ ने वद आख की, हबीब[3]
क्या होशियार-ओ आक़िल ओ-दाना व क्या तबीब[4]
कोई खज़ाना खाक में गड़वाके मर गया
जीता रहा न कोई हर इक आके मर गया

मरने के पहले मर गये जो आशिक़ाने ज़ार
वह जिन्दए-अबद[5] हुए ता-हश्र[6] बरकरार
क्या कातिबाने-अहले-कलम[7] खुश-नवीस कार[8]
जितनी किताबें देखते हो लाख या हज़ार
कोइ लिख के मर गया कोइ लिखवाके मर गया
जीता रहा न कोइ हर इक आके मर गया

पीरो-मुरीद, शाहो गदा[9] मीर[10] और वज़ीर
सब आन के अजल के हुए दाम[11] में असीर[12]
मुफ़लिस, गरीब, साहबे-ताजो अलम सरीर[13]
कौन इस जहां में जिन्दा रहा ऐ मियां 'नज़ीर'
कोई हज़ारों ऐश की ठहरा के मर गया
जीता रहा न कोइ हर इक आके मर गया

० ०

१ शरीफ़ २ खानदानी ३ मित्र ४ चिकित्सक ५ अमर ६ क़या-मत तक ७ लेखक ८ सुलेखन कलाकार ९ राजा रंक १० सरदार ११ जाल १२ बंदी १३ ताज, झंडे और तख्त के मालिक

बजारा-नामा

टुक हिर्सो हवा[1] को छोड मिया, मत देस बिदेस फिरे मारा
कज्जाक[2] अजल[3] का लूटे है दिन-रात बजाकर नक्कारा
क्या बधिया, भसा, बैल, शुतुर[4] क्या गौने पल्ला सर भारा
क्या गेहू, चावल, मोठ, मटर, क्या आग, धुआ और अगारा
सब ठाठ पडा रह जावेगा जब लाद चलेगा बजारा

गर तू है लक्खी बजारा और खेप भी तेरी भारी है
ऐ गाफिल तुझसे भी चढता इक और बडा ब्योपारी है
क्या शक्कर, मिसरी, कद, गरी क्या साँभर मीठा खारी है
क्या दाख, मुनक्का, मोठ, मिरच, क्या केसर, लौग, सुपारी है
सब ठाठ पडा रह जावेगा जब लाद चलेगा बजारा

तू बधिया लादे बैल भरे जो पूरब पच्छिम जावेगा
या सूद बढाकर लावेगा या टोटा घाटा पावेगा
कज्जाक अजल का रस्ते मे जब भाला मार गिरावेगा
धन दौलत नाती पोता क्या इक कुनबा काम न आवेगा
सब ठाठ पडा रह जावेगा जब लाद चलेगा बजारा

जब चलते-चलते रस्ते मे यह गौन तेरी रह जावेगी
इक बधिया तेरी मिट्टी पर फिर घास न चरने पावेगी
यह खेप जो तूने लादी है सब हिस्सो मे बट जावेगी
धी, पूत, जमाई, बटा क्या, बजारिन पास न आवेगी
सब ठाठ पडा रह जावेगा जब लाद चलेगा बजारा

---
१ लालच २ डाकू ३ मौत ४ ऊँट

यह खेप भरे जो जाता है यह खेप मिया मत गिन अपनी
अब कोई घडी पल साअत[1] म यह खेप बदन की है कफनी
क्या थाल कटोरी चाँदी की क्या पीतल की डिबिया ढकनी
क्या बरतन सोने चाँदी के क्या मिट्टी की हँडिया चपनी
सब ठाठ पडा रह जावेगा जब लाद चलेगा बजारा

यह धूम-धडक्का साथ लिये क्यो फिरता है जगल जगल
इक तिनका साथ न जावेगा मौकूफ़[2] हुआ जब अन्न और जल
घर-बार अटारी चौपारी क्या खासा, नैनसुख और मलमल
क्या चिलमन, परदे, फर्श नये क्या लाल पलग और रग-महल
सब ठाठ पडा रह जावेगा जब लाद चलेगा बजारा

कुछ काम न आवेगा तेरे यह लालो-जमरु द[3] सीमो-ज़र[4]
जब पूजी बाट म बिखरेगी हर आन बनेगी जान ऊपर
नौबत, नक्कारे, बान, निशा, दौलत, हशमत, फौजें, लशकर
क्या मसनद, तकिया, मुल्क मका, क्या चौकी, कुर्सी, तख्त, छतर
सब ठाठ पडा रह जावेगा जब लाद चलेगा बजारा

क्यो जी पर बोझ उठाता है इन गौनो भारी-भारी के
जब मौत का डेरा आन पडा फिर दूने हैं ब्योपारी के
क्या साज जडाऊ, ज़र[5] जेवर क्या गोटे थान किनारी के
क्या घोडे ज़ीन सुनहरी के क्या हाथी लाल अमारी के
सब ठाठ पडा रह जावेगा जब लाद चलेगा बजारा

---

१ घडी २ बद ३ लाल और पुखराज ४ चाँदी, सोना
५ सोना

मगरूर[1] न हो तलवारो पर मत भूल भरोसे ढालो के
सब पत्ता तोड के भागेंगे मुँह देख अजल के भालो के
क्या डिब्बे मोती हीरो के क्या ढेर खजाने मालो के
क्या बुकचे ताश[2] , मुशज्जर[3] के क्या तख्ते शाल दुशालो के
सब ठाठ पडा रह जावेगा जब लाद चलेगा बजारा

क्या सख्त मकाँ बनवाता है खँभ तेरे तन का है पोला
तू ऊँचे कोट उठाता है वा गोर[4] गढे ने मुह खोला
क्या रैनी[5] , खदक, रद[6] बडे, क्या बुर्ज, कगूरा अनमोला
गढ, कोट, रहकला, तोप, किला, क्या शीशा दारू और गोला
सब ठाठ पडा रह जावेगा जब लाद चलेगा बजारा

हर आन नफे और टोटे म क्यो मरता फिरता है बन-बन
टुक गाफिल दिल मे सोच जरा है साथ लगा तेरे दुश्मन
क्या लौंडी, बादो, दाई, दिदा[7] क्या बन्दा, चेला नेक-चलन
क्या मसजिद, मदिर, ताल, कुआँ क्या खेतीवाडी, फूल, चमन
सब ठाठ पडा रह जावेगा जब लाद चलेगा बजारा

जब मर्ग[8] फिराकर चाबुक को यह बल बदन का हाँकेगा
कोई ताज समेटेगा तेरा कोई गौन सिये और टाँकेगा
हो ढेर अकेला जगल मे तू खाक लहद[9] की फाँकेगा
उस जगल मे फिर आह 'नजीर' इक तिनका आन न झाँकेगा
सब ठाठ पडा रह जावेगा जब लाद चलेगा बजारा

---

१ घमडी २ एक तरह का छपा हुआ कपडा ३ वह कपडा जिस पर पेडों का डिजाइन हो ४ कब्र ५ किले की छोटी दीवार ६ दीवार के वह सूराख जिनसे बदूकों की मार की जाय ७ बूढी नौकरानी ८ मौत ९ कब्र

खुदा की खुदाई

तनहा[1] न उसे अपने दिले तग मे पहचान
हर बाग मे, हर दश्त[2] म हर सग[3] मे पहचान
बे-रग मे, बा-रग[4] मे, नै-रग[5] मे पहचान
मजिल मे, मुकामात मे, फरसग[6] म पहचान
नित रूम[7] म, और हिन्द मे और जग[8] मे पहचान
हर राह म हर साथ मे हर सग मे पहचान
हर अज़म[9] इरादे मे, हर आहग[10] मे पहचान
हर धूम मे हर सुलह मे हर जग मे पहचान
हर आन मे, हर बात म, हर ढग मे पहचान
आशिक है तो दिलबर को हर इक रग में पहचान

फल पात कही, शाख कही, फूल कही बेल
नरगिस कही, सोसन कही, बेला कही रावेल
आजाद कोई सबसे, किसी का है कही मेल
मलता है कोई राख, चमेली का कोई तेल
करता है कोई, जुल्म को लेता है कोई झेल
बाँधे कही तलवार, उठाता है कोई सेल[11]
अदना कोई आला, कोई सूखा, कोई डडपेल
जब गौर से देखा तो उसी के है ये सब खेल
हर आन मे, हर बात म, हर ढग म पहचान
आशिक है तो दिलबर को हर इक रग मे पहचान

---

१ केवल १ जगल ३ पत्थर ४ रगीन ५ विभिन्नता
६ लगभग ३ मील का एक माप ७ रोम ८ अफ्रीका ९ इरादा
१० आवाज ११ घूसा

गाता है कोई शौक मे करता है कोइ हाल[1]
छाने है कोइ खाक उडाता है कोइ माल
हसता है कोइ शाद किसी का है बुरा हाल
रोता है कोइ होके गमो दर्द म पामाल[2]
नाचे है कोइ शोख बजाता है कोई गाल
पहने है कोइ चीथडे ओढे है कोइ शाल
करता है कोई नाज दिखाता है कोइ चाल
जब गौर से देखा तो उसी की है ये सब चाल

हर आन म, हर बात म, हर ढग मे पहचान
आशिक है तो दिलबर को हर इक रग मे पहचान

जाता है हरम[3] मे कोई कुरआन बगल मार
कहता है कोइ दैर[4] मे पोथी के समाचार
पहुचा है कोइ पार भटकता है कोइ वार
बैठा है कोइ ऐश मे फिरता है कोई ज़ार
आजिज[5] कोइ, बेकस कोइ, ज़ालिम कोई लठमार
मुफलिस कोई नाचार, तवगर[6] कोइ जरदार[7]
ज़ख्मी कोइ, मादा कोई, अच्छा कोइ बदकार
जब गौर से देखा तो उसी के हैं सब असरार[8]

हर आन मे, हर बात मे, हर ढग म पहचान
आशिक है तो दिलबर को हर इक रग म पहचान

---

१ सूफियो का मस्ती म नाचना २ पद-दलित ३ काबा
४ मदिर ५ विवश ६ धनी ७ धनी ८ रहस्य

सर्दी कहीं, गर्मी कहीं, जाड़ा कहीं बरसात
दोज़ख कहीं बैकुण्ठ कहीं अर्ज़ो - समावात[1]
हूरें कहीं, गिल्मा कहीं, परियाँ कहीं जिन्नात
ऊजड़ कहीं, बस्ती कहीं, जंगल कहीं देहात
सख्ती कहीं, राहत कहीं, गर्दिश[2] कहीं सकनात[3]
शादी कहीं, मातम कहीं, नूर और कहीं जुल्मात[4]
तारे कहीं, सूरज कहीं, बुज और कहीं दिन-रात
जब गौर से देखा तो उसी के है तिलिस्मात[5]
हर आन मे, हर बात म, हर ढंग मे पहचान
आशिक है तो दिलबर को हर इक रंग म पहचान

क्या हुस्न कहीं पाया है अल्लाह ही अल्लाह
क्या इश्क कहीं छाया है अल्लाह ही अल्लाह
क्या रंग ये रंगवाया है अल्लाह ही अल्लाह
क्या नूर ये झमकाया है अल्लाह ही अल्लाह
क्या धूप है क्या साया है अल्लाह ही अल्लाह
क्या मेहर[6] है क्या माया है अल्लाह ही अल्लाह
क्या ठाठ ये ठहराया है अल्लाह ही अल्लाह
क्या भेद 'नज़ीर' आया है अल्लाह ही अल्लाह
हर आन म, हर बात मे, हर ढंग म पहचान
आशिक है तो दिलबर को हर इक रंग म पहचान

---

१ ज़मीन आसमान २ घूमना ३ ठहरना ४ अंधेरा ५ जादू
६ कृपा

मुफ़लिसी

जब आदमी के हाल पे आती है मुफ़लिसी[1]
किस किस तरह से उसको सताती है मुफ़लिसी
प्यासा तमाम रोज़ बिठाती है मुफ़लिसी
भूखा तमाम रात सुलाती है मुफ़लिसी
यह दुख वो जाने जिस पे कि आती है मुफ़लिसी

जो अहले-फ़ज़्ल[2] आलिमो फ़ाज़िल कहाते हैं
मुफ़लिस हुए तो कलमा तलक भूल जाते हैं
पूछे कोई 'अलिफ़' तो उसे 'बे' बताते हैं
वह जो गरीबो-गुरबा के लड़के पढ़ाते हैं
उनकी तो उम्र भर नहीं जाती है मुफ़लिसी

जब रोटियों के बटने का आकर पड़े शुमार
मुफ़लिस को देवें एक तवंगर[3] को चार-चार
गर और मांगे वह तो उसे झिड़कें बार-बार
इस मुफ़लिसी का आह बयां क्या करूं मैं यार
मुफ़लिस को इस जगह भी चबाती है मुफ़लिसी

मुफ़लिस की कुछ नज़र नहीं रहती है आन पर
देता है अपनी जान वो एक-एक नान[4] पर
हर आन टूट पड़ता है रोटी के ख़्वान[5] पर
जिस तरह कुत्ते लड़ते हैं इक उस्तख़्वान[6] पर
वैसा ही मुफ़लिसों को लड़ाती है मुफ़लिसी

---

१ ग़रीबी २ विद्वान ३ मालदार ४ रोटी ५ थाल
६ हड्डी

लाजिम है गर गमी म कोई शोरगुल मचाय
मुफलिस बगैर गम के ही करता है हाय-हाय
मर जाय गर कोई तो कहा से उसे उठाय
इस मुफलिसी की ख्वारिया क्या क्या कहू मैं हाय
मुर्दे को बेकफन के गडाती है मुफलिसी

क्या क्या मैं मुफलिसी की कहूँ ख्वारी फकडियां
झाडू बगैर घर म बिखरती है भकडिया
कोने म जाले लिपटे हैं, छप्पर म मकडिया
पैदा न होवें जिसके जलाने को लकडिया
दरिया म उसके मुर्दे बहाती है मुफलिसी

बीबी की नथ न लडके के हाथा कडे रहे
कपडे मिया के बनिये के घर मे पडे रहे
जब कडिया बिक गईं तो खडहर मे पडे रहे
जजीर नै[1] किवाड न पत्थर गडे रहे
आखिर को ईंट ईंट खुदाती है मुफलिसी

नक्काश[2] पर भी जोर जब आ मुफलिसी करे
सब रग दम म करदे मुसव्वर[3] के किरकिरे
सूरत ही उसकी देख के मुह खिच रहे परे
तसवीर और नक्श[4] मे वह रग क्या भरे
उसके तो मुह का रग उडाती है मुफलिसी

---

१ न २ चित्रकार ३ चित्रकार ४ रेखाओ

जव मुफलिसी से होवे कलावत का दिल उदास
फिरता है ले तबूरे को हर घर के आस पास
इक पाव सेर आटे की दिल मे लगा के आस
गौरी का वक्त होवे तो गाता है वह विभास
या तक हवास उसके उडाती है मुफलिसी

मुफलिस जो व्याह बेटी का करता है बोल-बोल
पैसा कहा जो जाके वो लावे जहेज़ मोल
जोरू का वह गला है कि फूटा हो जैसे ढोल
घर की हलालखोरी[1] तलक करती है ठिठोल
हैबत[2] तमाम उसकी उठाती है मुफलिसी

बेटे का व्याह हो तो न भाई न साथी है
नै रौशनी न बाजे की आवाज़ आती है
मा पीछे एक मैली चदर ओढे जाती है
बेटा बना है दूल्हा तो बाबा बराती है
मुफलिस की यह बरात चढाती है मुफलिसी

दरवाजे पर जनाने बजाते हैं तालिया
और घर मे बैठी डोमनी देती हैं गालिया
मालिन गले की हार हो दौडी ले डालिया
सक्का खडा सुनाता है बातें रिजालिया[3]
यह ख्वारी यह खराबी दिखाती है मुफलिसी

१ भगिन २ डर ३ बेहूदा

कोई "शूम, बेहया" कोई बोला "निखट्टू है"
बेटी ने जाना बाप तो मेरा निखट्टू है
बेटे पुकारते हैं कि "बाबा निखट्टू है"
बीबी ये दिन मे कहती है "अच्छा निखट्टू है"
आखिर निखट्टू नाम धराती है मुफलिसी

चूल्हा तवा न पानी के मटके म आबी[1] है
पीने को कुछ, न खाने को और न रकाबी है
मुफलिस के साथ सब के तई बेहिजाबी[2] है
मुफलिस की जोरू सच है कि हा सबकी भाभी है
इज्जत सब उसके दिल की गवाती है मुफलिसी

मुफलिस किसी का लडका जो ले प्यार से उठा
बाप उसका देखे हाथ का और पाव का कडा
कहता है कोई "जूती न लेवे कही चुरा"
नटखट, उचक्का, चोर, दगाबाज, गठकटा
सौ सौ तरह के ऐब लगाती है मुफलिसी

दुनिया मे लेके शाह से ऐ यारो ता-फकीर[3]
खालिक[4] न मुफलिसी म किसी को करे असीर[5]
अशराफ[6] को बनाती है इक आन म हकीर[7]
क्या क्या मे मुफलिसी की खराबी कहू 'नजीर'
वह जाने जिसके दिल को जलाती है मुफलिसी

---

१ आब (पानी) ही २ खुलापन ३ फकीर तक ४ ईश्वर ५ कदी ६ शरीफो ७ क्षुद्र

रोटियां

जब आदमी के पेट में आती हैं रोटियां
फूली नहीं बदन में समाती हैं रोटियाँ
आँखें परी-रुखों[1] से लड़ाती हैं रोटियाँ
सीने उपर भी हाथ चलाती है रोटियाँ
जितने मजे हैं सब ये दिखाती हैं रोटियां

रोटी से जिसका नाक तलक पेट है भरा
करता फिरे है क्या वो उछल-कूद जा ब-जा[2]
दीवार फादकर कोई कोठा उछल गया
ठट्ठा, हसी, शराब, सनक, साकी, उस सिवा
सौ-सौ तरह की धूमें मचाती हैं रोटियां

पूछा किसी ने यह किसी कामिल[3] फकीर से
यह मेहो-माह[4] हक[5] ने बनाये हैं काहे से
वह सुन के बोला, "बाबा, खुदा तुझको खैर दे
हम तो न चाँद समझें न सूरज हैं जानते
बाबा हम तो यह नजर आती हैं रोटियां"

रोटी न पेट में हो तो फिर कुछ जतन न हो
मेले की सैर, ख्वाहिशे-बागो-चमन न हो
भूखे गरीब दिल की खुदा से लगन न हो
सच है कहा किसी ने कि, "भूखे भजन न हो"
अल्लाह की भी याद दिलाती हैं रोटियां

---

१ सुन्दरियों २ हर जगह ३ पूर्ण ४ सूर्य चन्द्रमा ५ ईश्वर

रोटी से नाचे प्यादा कवायद दिखा दिखा
असवार नाचे घोड़े को कावा[1] लगा लगा
घुंघरू को बांधे पैक[2] भी फिरता है नाचता
और इसके सिवा ग़ौर से देखो तो जा-ब-जा
सौ सौ तरह के नाच दिखाती है रोटियां

रोटी के नाच तो है सभी खल्क[3] में पड़े
कुछ भांड भगैते ये नहीं फिरते नाचते
यह रंडियां जो नाचें हैं घूंघट को मुंह पे ले
घूंघट न जानो दोस्तो तुम जीनहार[4] उसे
इस परदे में ये अपने कमाती हैं रोटियां

दुनिया में अब बदी न कहीं और निकोई[5] है
या दुश्मनी व दोस्ती या तुन्द-खूई[6] है
कोई किसी का और किसी का न कोई है
सब कोई है उसी का कि जिस हाथ डोई है
नौकर, नफ़र[7] गुलाम बनाती हैं रोटियां

रोटी का अब अज़ल[8] से हमारा तो है खमीर
रूखी ही रोटी हक़ में हमारे है शहदो-शीर[9]
या पतली होवे मोटी, खमीरी हो या फतीर[10]
गेहूं, जुआर, बाजरे की जैसी हो 'नज़ीर'
हमको तो सब तरह की खुश आती हैं रोटियां

० ० ०

१ एड़ २ हरकारा ३ दुनिया ४ हर्गिज ५ नेकी ६ क्रोधी स्वभाव ७ नौकर ८ आदि दिवस ९ दूध और शहद १० मामूली आटे की

आदमी-नामा

दुनिया मे पादशह[1] है सो है वह भी आदमी
और मुफलिसो-गदा[2] है सो है वह भी आदमी
जरदार[3], बे-नवा[4] है सो है वह भी आदमी
नेअमत जो खा रहा है सो है वह भी आदमी
टुकडे चबा रहा है सो है वह भी आदमी

अब्दाल, कुत्ब, गौस, वली[5] आदमी हुए
मुनकिर भी आदमी हुए और कुफ्र के भरे
क्या क्या करिश्मे कश्फो करामात[6] के लिए
हत्ता[7] कि अपने जुह्दो-रियाज़त[8] के ज़ोर से
खालिक[9] से जा मिला है सो है वह भी आदमी

फरऔन ने किया था जो दावा खुदाइ का
शद्दाद भी बिहिश्त बनाकर खुदा हुआ
नमरूद भी खुदा ही कहाता था बरमला[10]
यह बात है समझने की आगे कहू मै क्या
या तक जो हो चुका है सो है वह भी आदमी

या आदमी ही नार[11] है और आदमी ही नूर
या आदमी ही पास है और आदमी ही दूर
कुल आदमी का हुस्नो कवह[12] मे है या जहूर[13]
शैता भी आदमी है जो करता है मक्रो जोर
और हादी[14] रहनुमा[15] है सो है वह भी आदमी

---

१ बादशाह २ फकीर और निधन ३ धनी ४ निधन ५ यह सब सूफियो के ऊचे दरजे ह ६ चमत्कार ७ यहा तक ८ तपस्या ९ ईश्वर १० साफ ११ आग १२ पाप पुण्य १३ जाहिर होना १४ पथ प्रदर्शक १५ पथ प्रदर्शक

मसजिद भी आदमी ने बनायी है या मियां
बनते हैं आदमी ही इमाम[1] और खुत्बा-ख्वां[2]
पढ़ते हैं आदमी ही कुरान और नमाज यां
और आदमी ही उनकी चुराते हैं जूतियां
जो उनको ताड़ता है सो है वह भी आदमी

यां आदमी पे जान को वारे है आदमी
और आदमी पे तेग को मारे है आदमी
पगड़ी भी आदमी की उतारे है आदमी
चिल्ला के आदमी को पुकारे है आदमी
और सुन के दौड़ता है सो है वह भी आदमी

चलता है आदमी ही मुसाफिर हो, ले के माल
और आदमी ही मारे है फांसी गले मे डाल
यां आदमी ही सैद[3] है और आदमी ही जाल
सच्चा भी आदमी ही निकलता है, मेरे लाल!
और झूठ का भरा है सो है वह भी आदमी

यां आदमी ही शादी है और आदमी विवाह
काज़ी, वकील आदमी और आदमी गवाह
ताशे बजाते आदमी चलते हैं खामखाह
दौड़े है आदमी ही तो मशअल जला के राह
और ब्याहने चढ़ा है सो है वह भी आदमी

१ नमाज के नेता २ धार्मिक वक्ता ३ शिकार

और आदमी नकीब[1] हो बोले है बार-बार
और आदमी ही प्यादे हैं और आदमी सवार
हुक्का, सुराही, जूतियां दौडे बगल मे मार
काधे पे रख के पालकी हैं दौडते कहार
और उसमे जो पडा है सो है वह भी आदमी

बैठे है आदमी ही दुकानें लगा - लगा
और आदमी ही फिरते हैं रख सर पे ख्वांचा
कहता है कोई 'लो', कोइ कहता है "ला, रे ला"
किस-किस तरह की बेचे हैं चीज बना बना
और मोल ले रहा है सो है वह भी आदमी

तबले, मजीरे, दायरे, सारंगिया बजा
गाते हैं आदमी ही हर इक तरह जा व जा[2]
रंडी भी आदमी ही नचाते हैं गत लगा
और आदमी ही नाचें हैं और देख फिर मज़ा
जो नाच देखता है सो है वह भी आदमी

या आदमी ही लालो - जवाहर हैं बे - बहा[3]
और आदमी ही खाक से बदतर है हो गया
काला भी आदमी है कि उल्टा है ज्यू तवा
गोरा भी आदमी है कि टुकडा है चाद का
बदशक्ल बदनुमा है सो है वह भी आदमी

१ 'हटो बचो' कहने वाला प्यादा २ हर जगह ३ अमूल्य

इक आदमी हैं जिनके ये कुछ ज़र्क-बर्क[1] हैं
रूपे के जिनके पाव हैं सोने के फर्क[2] हैं
झमके तमाम ग़र्ब[3] से ले ता-ब-शर्क[4] हैं
कमख्वाब, ताश, शाल, दुशालो मे ग़र्क[5] है
और चीथडो लगा है सो है वह भी आदमी

हैरा हू यारो देखो तो यह क्या सुआग[6] है
या आदमी ही चोर है और आप ही थाग[7] है
है छीना झपटी और कही बाग ताग है
देखा तो आदमी ही यहा मिस्ले-राग है
फौलाद से गढा है सो है वह भी आदमी

मरने मे आदमी ही कफन करते हैं तयार
नहला-धुला उठाते हैं काधे पे कर सवार
कलमा भी पढते जाते हैं रोते हैं ज़ार ज़ार
सब आदमी ही करते हैं मुरदे के कारोबार
और वह जो मर गया है सो है वह भी आदमी

अशराफ[8] और कमीने से ले शाह ता-वज़ीर[9]
यह आदमी ही करते हैं सब कारे-दिल-पिज़ीर[10]
या आदमी मुरीद है और आदमी ही पीर
अच्छा भी आदमी ही कहाता है ऐ 'नज़ीर'
और सब मे जो बुरा है सो है वह भी आदमी

◇ ◇ ◇

---

१ भडकदार (कपडे) २ माथे ३ पश्चिम ४ पूर्व तक ५ डूबे
६ स्वाग ७ चोरो को पता देने वाले ८ शरीफ ९ मन्त्री तक
१० अच्छे काम

हस-नामा

दुनिया की जो उल्फत का हुआ उसको सहारा
और उसने खुशी को मेरी खातिर[1] मे उतारा
देखी जो ये गफलत तो मेरा दिल ये पुकारा
आया था किसी शहर से इक हस बेचारा
इक पेड पे जगल के हुआ उसका गुजारा

चहूल, अगन, अबलके, छप्पा, बने, ढेयर
मैना व बये, किलकिले, बगुले भो समन बर[2]
तोते भी कई तौर के टुइयाँ कोइ लह्वर
रहते थे बहुत जानवर उस पेड के ऊपर
उसने भी किसी शाख पे घर अपना सवारा

बुलबुल ने किया उसकी मुहब्बत मे खुश-आहग[3]
और कोकिले कोयल ने भी उल्फत को लिया सग
खजन मे कलिगो मे थी चाहत की बजी चग
देखा जो तयूरो[4] न उसे हुस्न मे खुश रग
वह हस लगा सब की निगाहो मे पियारा

सीमुर्ग[5] भी सौ दिल से हुए मिलने के शायक[6]
गढपख भी पँखियो के हुए भलने के लायक
सारस भी हवासिल[7] भी हुए उसके मुआफिक
बाज-ओ-लगड ओ-जर्रा ओ शारी[8] हुए आशिक
शिकरो ने भी शबवर से किया उसका मुदारा[9]

---

१ जी २ सफेद पर वाले ३ गाना ४ चिडियो ५ एक काल्पनिक बडा पक्षी ६ इच्छुक ७ एक पोहदार पानी की चिडिया ८ बाज ९ सत्कार

कुछ सब्ज़क-ओ-बडनक्के व कुछ टनटनो-बर्रे
पिडखी से लगा टोटर - ओ - कुमरी - ओ - हरपवे
गौगाई, बगेरे व लट्टूरे व पपीहे
कुछ लाल, चिडे, पोदने, पिद्दे ही न गश[1] थे
पडरी भी समझती थी उसे आख का तारा

चाहत के गिरफ्तार बटेरे, लवे तीतर
कब्कों[2] के तदर्वों[3] के भी चाहत में बँधे पर
हुदहुद भी हुए हित के बढय्या इधर - उधर
ज़ागो जगन[4] -ओ तूती ओ-ताऊस[5] - ओ - कबूतर
सब करने लगे उसकी मुहब्बत का इशारा

शक्ल उसकी वही आके खुपी शाम चिडी के
दी चाह जता फिर वही झापू ने भी झप से
हरियल भी हुए उसके बडे चाहने वाले
जितने गरज उस पेड पे रहते थे परिंदे[6]
उस हस पे उन सब ने दिलो-जान को वारा

ख्वाहिश ये हुई उसकी कि हर दम उसे देखें
और उसकी मुहब्बत से ज़रा मुह को न फेरें
दिन-रात उसे खुश रखें नित सुख उसे देवें
मोहब्बत जो हुई हस की उन जानवरो मे
यक चन्द रहा खूब मुहब्बत का गुज़ारा

---

१ आसक्त २ एक सुन्दर पक्षी ३ तीतर ४ कौन-चीन ५ मोर ६ पक्षी

सब होके खुश उसको मए-उल्फ़त[1] लगे पीने
और प्रीत से हर इक ने वहां भर लिये सीने
हर आन जताने लगे चाहत के करीने[2]
उस हंस को जब हो गये दो-चार महीने
इक रोज़ वो यारों की तरफ देख पुकारा

या लुत्फो करम[3] तुमने किये हम पे हैं जो-जो
तुम सब की ये खूबी है कहां हम से बयां हो
तकसीर[4] कोई हम से हुई होवे तो बख्शो
लो यारो हम अब जावेंगे कल अपने वतन को
अब तुमको मुबारक रहे यह पेड़ तुम्हारा

अब तक तो बहुत हम रहे फुरसत से हम-आगोश[5]
अब यादे-वतन दिल की हमारे हुई हम-दोश[6]
जब हर्फ़ जुदाई का परिन्दों ने किया गोश[7]
इस बात के सुनते ही जो हर इक के उड़े होश
सब बोले, "ये फुरकत[8] तो नहीं हमको गवारा

बिन देखे तुम्हारे हम कब चैन पड़ेंगे
इक आन न देखेंगे तो दिल गम से भरेंगे
गर तुमने ये ठहराई तो क्या सुख से रहेंगे?
हम जितने हैं सब साथ तुम्हारे ही चलेंगे
यह दर्द तो अब हम से न जावेगा सहारा

१ प्रेम मदिरा २ ढंग ३ कृपाएं ४ कसूर ५ मिले जुले
६ साथ ७ कान (सुनना) ८ विरह

फिर हस ने यह बात कही उनसे कि "ऐ यार
कुछ बस नही अब चलने की साग्रत[1] से है नाचार"
ग्राखें हुईं ग्रश्को[2] से परिंदो की गुहर-बार[3]
इसमे जो शबे-कूच[4] की हुई सुब्ह नमूदार[5]
पर अपना हवा पर वही उस हस ने मारा

वह हस जब उस पेड से वा को चला नागाह[6]
मुह फेर के ईधर से वतन की ज्यूंही ली राह
देखा जो उसे जाते हुए वा से, तो कर आह
सब साथ चले उसके वो हमराह हवा-ख्वाह[7]
हर एक ने उडने के लिए पख पसारा

और हस की उन सबको रिफाकत[8] हुई गालिब[9]
जब वा से चला वह तो हुई बेबसी गालिब
कुल्फत[10] जो थी फुरक़त की वो सब पर हुइ गालिब
दो कोस उडे थे जो हुई मादगी[11] गालिब
फिर पर मे किसी के न रहा कुव्वतो-यारा[12]

पर उनके हुए तर ज्यूंही दूरी की पडी ओस
रोये कि रिफाकत की करें क्योंकि कदमबोस[13]
थक-थक के लगे गिरने तो करने लगे अफसोस
कोई तीन, कोई चार, कोइ पाच उडा कोस
कोइ आठ, कोई नौ, कोइ दस कोस मे हारा

---

१ घडी २ आसू ३ मोती बरसाने वाली ४ कूच की रात ५ प्रकट ६ अचानक ७ प्रेमी ८ दोस्ती ९ ज़ोर पर १० दुख ११ थकावट १२ ताकत १३ पाव चूमना

जब बन न सके उनसे रफीकी[1] के जोवाकार
और इतने उडे साथ कि कुछ होवे न इज़हार
जब देखी वो मुश्किल तो फिर आखिर के तईं हार
कोई या रहा कोई वा रहा कोइ हो गया नाचार
कोइ और उडा आगे जो था सब मे करारा

थी उसकी मुहब्बत की जो हर एक ने पी मैं
समझे थे वो दिल मे बहुत उल्फत को बडी शै[2]
जब हो गये बेबस तो फिर आखिर ये हुइ रै[3]
चीलें रही कौवे गिरे और बाज भी थक गये
उस पहली ही मजिल म किया सबने किनारा

दुनिया की ये उल्फत है तो उसकी है ये कुछ राह
जब शक्ल ये होवे तो भला क्योंकि हो निर्वाह
नाचारी हो जिस जा[4] मे तो वा कीजिए क्या चाह
सब रह गये जो साथ के साथी थे 'नजीर' आह
आखिर के तईं हस अकेला ही सिधारा

० ० ०

१ मित्रता २ चीज ३ राय ४ जगह

कन्हैया जी का खेलकूद

तारीफ करूं अब मैं क्या-क्या उस मुरली अधर बजैया की
नित सेवा कुंज फिरैया की और बन बन गऊ-चरैया की
गोपाल, बिहारी, बनवारी, दुख हरना, मेह्र[1] करैया की
गिरधारी, सुन्दर, श्याम वरन और हलधर जू के भैया की

यह लीला है उस नन्द-ललन, मनमोहन, जसुमति छैया की
रख ध्यान सुनो दंडोत करो, जय बोलो किशन कन्हैया की

इक रोज़ खुशी से गेंद तडी ले मोहन जमुना तीर गये
वा खेलन लागे हँस-हँस के यह कहकर ग्वाल और बालन से
जो गेंद पडे जा जमुना मे फिर जाकर लावे जो फेंके
वह आप ही अंतरजामी थे क्या उनका भेद कोई पावे

यह लीला है उस नन्द ललन मनमोहन जसुमति-छैया की
रख ध्यान सुनो दंडोत करो जै बोलो किशन कन्हैया की

वा किशन मदन मनमोहन ने सब ग्वालन से यह बात कही
और आप ही झप से गेंद उठा उस कालीदह मे डाल दई
फिर आप ही झप से कूद पडे और जमुना जी मे डुबकी ली
सब ग्वाल सखा हैरान रहे पर भेद न समझे इक रत्ती

यह लीला है उस नन्द ललन मनमोहन जसुमति छैया की
रख ध्यान सुनो दंडोत करो जै बोलो किशन कन्हैया की

---

१ कृपा

यह बात सुनी ब्रज नारिन ने तब घर-घर इसकी धूम मची
नन्द और जसोदा आ पहुँचे सुध भूल गई अपने तन की
आ जमुना पर गुल-शोर हुआ और ठठठ बधे और भीड लगी
कोई आसू डाले हाथ मले पर भेद न जाने कोई भी
यह लीला है उस नन्द ललन मनमोहन जसुमति-छैया की
रख ध्यान सुनो दडौत करो जै बोलो किशन कन्हैया की

जिस दह मे कूदे मनमोहन वा आन छुपा था इक काली
सर पाव से उनके आ लिपटा उस दह के भीतर देखते ही
फन मारे, पहुँचा ज़ोर किये और पहरो तक वा कुश्ती की
फुकारें ली, बल तेज़ किये, पर किशन रहे वा हँसते ही
यह लीला है उस नन्द ललन मनमोहन जसुमति-छैया की
रख ध्यान सुनो दडौत करो जै बोलो किशन कन्हैया की

जब काली ने सौ पेच किये फिर एक कला वा श्याम ने की
इस तौर बढाया तन अपना जो उसका निकसन लागा जी
फिर नाथ लिया उस काली को इक पल भर मे, ना देर करी
वह हार गया और अस्तुत की, हर नागिन भी फिर पाव पडी
यह लीला है उस नन्द ललन मनमोहन जसुमति-छया की
रख ध्यान सुनो दडौत करो जै बोलो किशन कन्हैया की

उस दह म सुन्दर, श्याम बरन उस काली को जब नाथ चुके
लें नाथ को उसकी हाथ अपने फिर हर फन ऊपर नृत्य किये
कर बस म अपने काली को मुसक्याने, मुरली अधर धरे
जब बाहर आये मनमोहन सब खुश हो ज जै बोल उठे
यह लीला है उस नन्द ललन मनमोहन जसुमति-छैया की
रख ध्यान सुनो दडौत करो जै बोलो किशन कन्हैया की

थे जमुना पर उस वक्त खड़े वा जितने आकर नर-नारी
देख उनको मब खुश-हाल हुए जब बाहर निकले बनवारी
दुख-चिंता मन से दूर हुए आनन्द की आई फिर वारी
सब दरशन पाकर शाद हुए और बोले "जै जै, बलिहारी"
यह लीला है उस नन्द ललन मनमोहन जसुमति छैया की
रख ध्यान सुनो दडौत करो जै बोलो किशन कन्हैया की
नन्द और जसोदा के मन म सुध भूली बिसरी फिर आई
सुख चैन हुए, दुख भूल गये कुछ दान और पुन्न की ठहराई
सब ब्रज-वासिन के हिरदै मे आनन्द खुशी उस दम छाइ
उस रोज़ उन्होने यह भी 'नजीर' इक लीला अपनी दिखलाई
यह लीला है उस नन्द ललन मनमोहन जसुमति-छैया की
रख ध्यान सुनो दडौत करो ज बोलो किशन कन्हैया की

गजलें

वो रश्के-चमन[1] कल जो जेबे-चमन[2] था
चमन जुम्बिशे शाख[3] से सीना जन[4] था
गया मै जो उस बिन चमन मे तो हर गुल
मुझे उस घडी अख्गरे - पैरहन[5] था
ये गुचा[6] जो बेदद गुलची[7] ने तोडा
खुदा जाने किसका ये नक्शे - दहन[8] था

(किता)

तने-मुर्दा को क्या तकल्लुफ से रखना
गया वह तो जिससे मुज़य्यन[9] ये तन था
कइ बार हमने ये देखा कि जिनका
मुशय्यन[10] बदन था मुअत्तर कफन था
जो कब्रे-कुहन[11] उनकी उखडी तो देखा
न अज्वे-बदन[12] था न तारे-कफन था
'नज़ीर' आगे हमको हवस थी कफन की
जो सोचा तो नाहक का दीवानापन था

० ० ०

वो मुझको देख कुछ इस ढब से शर्मसार[13] हुआ
कि मै हया हो पे उसकी फक्त निसार हुआ
सभी को बोसे दिये हँस के और हमे गाली
हजार शुक्र भला इस कदर तो प्यार हुआ

---

१ बाग का लज्जित करने वाला (प्रियतम) २ बाग की शोभा ३ शाखाओं का हिलना ४ सीना पीटता हुआ ५ कपडे मे लगी चिंगारी ६ कली ७ फूल तोडने वाला ८ मुह की तसवीर ९ शोभित १० शानदार ११ पुरानी कब्र १२ शरीर का अंग १३ लज्जित

हमारे मरने को हां तुम तो झूठ समझे थे
कहा रकीब ने, लो अब तो एतबार हुआ ?
करार करके न आया वो संग दिल काफिर
पड़ें करार पे पत्थर, ये कुछ करार हुआ ?
गले का हार जो उस गुलबदन का टूट पडा
तो डर नज़र का वही उसको एक बार हुआ
किसी से और तो कुछ बस चला न उसका 'नजीर
निदान मेरे ही आकर गले का हार हुआ

○ ○ ○

रुख[1] परी, चश्म[2] परी, जुल्फ परी, आन परी
क्यो न अब नामे - खुदा हो तेरे कुरबान परी
झुमके झुमके वो सुरैया[3] के करनफूल, वो फूल
बुन्दे वाले परी, मोती परी और कान परी
मुस्कुराने की अदा जैसे चमक बिजली की
आन हँसने की कयामत, लबा - ददान[4] परी
आख मस्ती की भरी, शोख निगाहे चचल
वहर काजल की खिंचावट, मिसी-ओ-पान परी
क्या कहू उसके सरापा[5] की मै तारीफ 'नजीर'
कद परी, धज परी, आलम परी और शान परी

○ ○ ○

हँसे, रोये, फिरे रुसवा हुए, जाके बधे, छूटे
गरज हमने भी क्या-क्या कुछ मुहब्बत के मजे लूटे

१ चेहरा २ आख ३ एक तारा-समूह ४ होठ और दांत
५ नखशिख

कलेजे म फफोले, दिल मे दाग और गुल हैं हाथो पर
खिले है देखिए हम मे भी यह उल्फत के गुल बूटे

(क़िता)

ये कहते ह कि आशिक छूट जाता है अज़ीयत[1] से
जब उसकी उम्र को लश्कर अजल[2] का आनकर लूटे
हमारी रूह तो फिरती है माशूको की गलियो मे
'नजीर' अब हम तो मर कर भी न इस जजाल से छूटे

० ० ०

थे आगे बहुत जैसे कि खुश यार हमी से
ऐसे ही तुम अब रहते हो बेज़ार[3] हमी से
महफिल मे जो देखा तो इधर तुम हो खफा, और
साकी को भी है हुज्जतो-तकरार हमी से
औरो से जो कहते हो कि हम उनसे हैं नाखुश
इसको तो फकत करना है इजहार हमी से
समझेगा जो रुत्बे को 'नजीर' अहले-वफा[4] के
ता मिलने लगेगा वो तरहदार[5] हमी से

० ० ०

उसके शरारे-हुस्न[6] ने शोला जो इक दिखा दिया
तूर को सर से पाव तक फूक दिया जला दिया
फिर के निगाह चार-सू[7] ठहरी उसी के रू ब रू[8]
उसने तो मेरी चश्म[9] को किब्ला नुमा[10] बना दिया
मैं हू पतगे - कागजी डोर है उसके हाथ मे
चाहा इधर घटा दिया चाहा उधर बढा दिया

---

१ कष्ट २ मौत ३ नाराज़ ४ प्रेमिया ५ सुदर (प्रियतम) ६ सौंदय की चिंगारी ७ चारा ओर ८ सामने ९ आख १० वह चिह्न जो काबे की दिशा दिखाने को बनाया जाता है

तेशे[1] की क्या मजाल थी यह जो तराशे बे-सतू[2]
था वो तमाम दिल का ज़ोर जिसने पहाड ढा दिया
सुनके ये मेरा अर्जे-हाल यार ने यूं कहा 'नजीर'
"चल बे, जियादा अब न बक तूने तो सर फिरा दिया"

० ० ०

गम यां यूं तो बडा हुस्न का बाजार रहा
मै फकत एक दुकां का ही खरीदार रहा
देखा मैं जब उसे फिर आईनए-चश्म[3] के बीच
ता-दमे-मर्ग[4] वही अक्स नमूदार[5] रहा
आ फसा जो कोई इस दाम-गहे-हस्ती[6] मे
था जो दाना[7] तो बहुत ज़ीस्त[8] से बेज़ार रहा
बस जो होता तो न रहता कभी दुनिया मे 'नजीर'
था जो बेबस कोई दिन इसलिए लाचार रहा

० ० ०

ब-हस्बे अक्ल[9] तो कोई नहीं सामान मिलने का
मगर दुनिया से ले जावेंगे हम अरमान मिलने का
अजब मुश्किल है, क्या कहिए बगैर अज जान देने के
कोई नक्शा नजर आता नहीं आसान मिलने का

---

१ पत्थर काटने की कुदाल २ वह पहाड जिसे काटकर फरहाद शीरीं के लिए दूध की नहर लाया था ३ आंख रूपी दर्पण ४ मरण तक ५ स्पष्ट ६ जीवन का जाल ७ बुद्धिमान ८ जिन्दगी ९ बुद्धि के अनुसार

(किता)

'नज़ीर' इक उम्र हम उस दिलरुबा[1] के वस्ल की ख़ातिर
बहुत रोये, बहुत चीख़े, पे क्या इमकान[2] मिलने का ?
हमारी बेक़रारी इज्तराबी[3] कुछ न काम आई
वो ख़ुद ही आ मिला जब वक्त आया आन मिलने का

---

१ प्रियतम २ संभावना ३ बेचैनी

